ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का साहित्यिक मासिक

शांतिधर्मी

अगस्त–2018

पाञ्चजन्य हृषीकेश! अब तो गुंजाओ!

₹10

प्रकाशन का 20वां वर्ष

अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता श्री आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी अपनी विदेश प्रचार यात्रा के दौरान सिनसिनाटी पधारे। मेजबानों को प्रेरणा कर नवीन आर्य समाज की स्थापना की और सदस्यों को शपथ ग्रहण करवाई।

गुरुकुलों का धमाल : गुरुकुल देहरादून के ब्र० दीपक कुमार आर्य ने एशियन गेम्स में निशानेबाजी में रजत पदक प्राप्त किया तथा विभिन्न संस्कृत प्रतियोगिताओं में सर्व विजेता गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारीगण।

आर्य समाज न्यू मुल्तान नगर दिल्ली में श्रीकृष्ण जी पर आयोजित कार्यशाला में मुख्यवक्ता डॉ० विवेक आर्य।

शान्तिधर्मी परिसर में तीज महोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया। सत्यसुधा शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया गया।

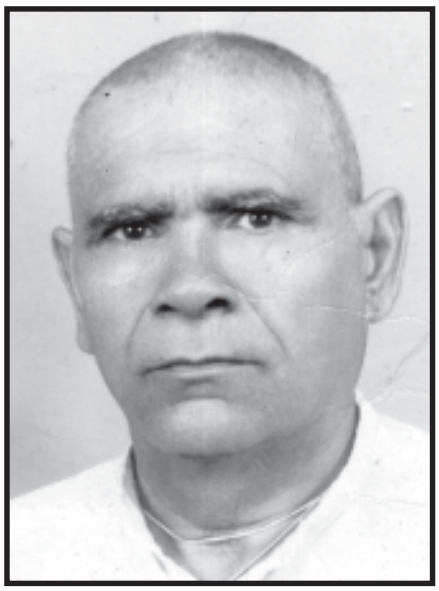

संस्थापक एवं आद्य सम्पादक

पं० चन्द्रभानु आर्य

सम्पादक : सहदेव समर्पित

(चलभाष **09416253826**)

उपसम्पादक : सत्यसुधा शास्त्री

प्रबंध संपादक : सुभाष श्योराण

आदरी सम्पादक : यज्ञदत्त आर्य

सह-सम्पादक : राजेशार्य आट्टा

डॉ० विवेक आर्य

विधि परामर्शक : डॉ० नरेश सिहाग एडवोकेट

सहयोग : आचार्य आनन्द पुरुषार्थी

श्रीपाल आर्य, बागपत

महेश सोनी, बीकानेर

भलेराम आर्य, सांघी

कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी

कार्यालय व्यवस्थापक: रविन्द्रकुमार आर्य

कम्प्यूटर सज्जा : बिशम्बर तिवारी

सहयोग राशि

एक प्रति	:	१०.०० रु०
वार्षिक	:	१२०.०० रु०
दस वर्ष	:	१०००.०० रु०

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शांतिधर्मी

अगस्त, २०१८ ई०

वर्ष : २० अंक : ७ <u>श्रावण</u> २०७५ विक्रमी

स ष्टि संवत्-१९६०८५३११९, दयानन्दाब्द : १९५

क्या? कहाँ?....

आलेख

मन ही बंधन और मोक्ष का कारण (पुनर्प्रकाशन शांतिप्रवाह) ७

सामवेद अनुशीलन (नित नया और फिर पुराना) ८

मतान्तरण नहीं है समस्या का समाधान (राष्ट्र-चिन्तन) १०

ग्यारह आत्महत्याएँ या हत्याएँ (अंधविश्वास) १२

कार्य कठिन नहीं होता, सोच कमजोर होती है (व्यक्तित्त्व विकास) १४

श्री अटलबिहारी वाजपेयी का आर्यसमाज से संबंध १५

सैनिक की डायरी (वीर गाथा) १६

वेद ही है ईश्वरीय ज्ञान (श्रावणी विशेष) १७

प्रभु मुझे वाणी की मधुरता प्रदान कीजिये २०

जीवन को उत्तम बनाने के चार उपाय : क्षत्र (जीवन-दर्शन) २२

स्वस्थ आहार के स्वर्णिम सूत्र (स्वास्थ्य चर्चा) २४

लघु-कथा/प्रसंग : प्रधानमंत्री की महानता/ मनुष्य के तीन मित्र-२७

कविता : ६, २१, २८,

स्थायी स्तम्भ : बाल वाटिका-२६, भजनावली-२८, बिन्दु बिन्दु विचार

Find us on: facebook

https://www.facebook.com/ShantidharmiHindiMasik

कार्यालय :

७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक,

जीन्द–१२६१०२ (हरियाणा)

दूरभाष : ९४१६२–५३८२६

ई-मेल-shantidharmijind@gmail.com

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

।। आत्म निवेदन।।

संस्कृति की रक्षा

❒सहदेव समर्पित

जो मानव का निर्माण करती है, इहलोक और परलोक को आनन्दमय बनाती है, वहीं संस्कृति है, इसके विपरीत सब विकृति है। संस्कृति की रक्षा उसका पालन करने से होती है। जो सांस्कृतिक आक्रमण संस्कृति को नष्ट करने के लिए होते हैं, वे तभी होते हैं, जब आक्रमणकारियों को संस्कृति अपने स्वार्थों में बाधा के रूप में दिखाई देती है। जब संस्कृतिविहीन लोगों के पास ताकत बढ़ती है तो उन्हें अपने सामने संस्कृति अपना सिर ताने खड़ी दिखाई देती है। भारत के साथ यही हुआ है। सांस्कृतिक या राजनैतिक आक्रमणों के समय, चाहे वे धन लूटने के उद्देश्य के लिए हुए हों, या राजसत्ता प्राप्त करने के लिए- उन्हें धन लूटने में तो महान प्रतिरोध का सामना करना ही पड़ा, सबसे बड़ा प्रतिरोध उनकी सत्ता को स्वीकार करने के लिए हुआ। चाहे इतिहास कहता हो-- हम हजारों साल गुलाम रहे, पर उस अधःपतन के काल में भी पूर्ण भारत में कभी विदेशी दासता को स्वीकार नहीं किया गया। चाहे महाराणा प्रताप का मेवाड़ हो, चाहे आर्य गौरव महाराज शिवाजी का संघर्ष हो, चाहे पंजाब में गुरुओं और बंदा बैरागी की बलिदानी परम्परा रही हो, विदेशी सत्ता को कभी चैन से नहीं बैठने दिया गया। यह संस्कृति रक्षा की जिद ही थी कि हजार साल बीतने पर भी देशवासियों में स्वतंत्रता की उत्कट भावना जीवित रही। पीढ़ियाँ मिट गई, लेकिन वह भावना न मिटी। इसीलिए विदेशी सत्ता ने इस उत्कट भावना के मूल यानि संस्कृति को नष्ट करने का प्रयास आरम्भ किया। अंग्रेजों को जाने के ९०-१०० साल पहले यह बात समझ में आई, और उन्होंने संस्कृति और संस्कारों को शिक्षा पद्धति में आमूल चूल परिवर्तन के द्वारा नष्ट करने की योजना बनाई। उससे पहले धार्मिक स्थलों को तोड़कर उसे नष्ट करने के प्रयास किये गए, लेकिन वे सफल न हुए। अंग्रेजों ने लार्ड मैकाले की योजना पर काम करते हुए उसका क्षरण किया, पर वे भी उसको पूर्णतः नष्ट न कर सके। उसके समानान्तर पारम्परिक शिक्षा पद्धति चलती रही। जो काम गुलामी के हजार साल में नहीं हो सका, वह आजादी के सत्तर सालों में आसानी से होता हुआ दिखाई दे रहा है।

संस्कृति के कुछ मूल आधार हैं। वे धीरे धीरे समाप्त हो रहे हैं। हम कहते हैं कि यह वैदिक संस्कृति है। यह वेद पर आधारित है। वेद ही ऐसा ईश्वरीय ज्ञान है, जो सम्पूर्ण मानवता के लिए है। उसमें किसी स्थान, भाषा, जाति, वर्ग या देश के प्रति कोई पक्षपात नहीं है। वेद मार्ग पर चलने से ही पूरी मानवता का कल्याण हो सकता है। वेद की भाषा वैदिक संस्कृत है जिससे संसार की अन्य सभी भाषाओं का निर्माण हुआ। वेद के अनेक लोगों ने अर्थ किए। प्राचीन आचार्यों के किये हुए अर्थों को उपेक्षित करके मध्यकाल में अनेक वेतनभोगी या मतवादी लोगों ने अपने मत के अनुसार उनके अर्थ किये। यह तो हम आज भी देख सकते हैं। ईसाई लोग 'ईशा वास्यमिद' मंत्र में ईसा मसीह को देखते हैं। कोई 'कविर्मनीषी' में कबीर को देखते हैं। कोई 'नराशंस' में मुहम्मद साहब को देखते हैं। इसी प्रकार वाममार्गी मत के अनुयायियों ने अपने मत की मान्यताओं के अनुसार अश्लील और असंगत अर्थ किये। बाद में गौतम बुद्ध आदि बुद्धिमान पुरुषों ने उनका विरोध किया। शंकराचार्य जैसे संस्कृति रक्षकों ने उन्हें पुनः प्रतिष्ठित करने के प्रयास किये, पर उनका थोड़ी अवस्था में ही बलिदान हो गया। फिर भी वेद को जनमानस के हृदयों से अप्रतिष्ठित नहीं किया जा सका। वोडेन के धन से आक्सफोर्ड विवि के माध्यम से मैक्स मूलर आदि धन के लालच में इनके अर्थों में घालमेल कर इनकी अप्रतिष्ठा करने का प्रयास करते रहे। इसी काल में महर्षि दयानन्द का आगमन हुआ। उन्होंने आर्ष विद्या और वेदांगों के आधार पर पुनः वेदों (यजुर्वेद पूर्ण और ऋग्वेद अपूर्ण) के वास्तविक अर्थ दुनिया के सामने रखे तो वेद विरोधियों के होश उड़ने लगे। स्वामी दयानन्द ने सही वेदार्थ को प्रतिष्ठित करने के लिए अधिकारियों को सप्रमाण लिखा। अंग्रेज उन वेदार्थों को प्रतिष्ठित करते तो उनकी तो योजना ही ध्वस्त हो जाती, पर वे चालाक लोग थे। उन्होंने उन वेदार्थों की यथार्थता का निर्णय उन लोगों को सौंप दिया जो शास्त्रार्थों में स्वामी दयानन्द के आगे बोल भी नहीं पाते थे। वे क्यों दयानन्द के अर्थों वाले वेदों को महत्त्व देते?

यह एक बड़ा रोमांचकारी और विडम्बनापूर्ण घटनाक्रम है। इससे भी बड़ी विडम्बना तो यह है कि आज स्वतंत्र भारत में भी वास्तविक वेदार्थ की प्रतिष्ठा नहीं हो पाई है। बल्कि अब तो अवास्तविक अर्थ भी कम ही दिखाई देते हैं। वेदों का अगर कहीं नाम आता है तो वेदनिन्दकों के माध्यम से आता है, जब वे उन्हीं गलत अर्थों के आधार पर वेदों में मांसाहार या अन्य संस्कृति विरोधी बातें दिखाते हैं।

जैसे सूर्य के अभाव में लोग अपने अपने दीपक जलाते हैं, वैसे ही वेद विद्या के अभाव में विभिन्न मत मतान्तर पनपते हैं और उनके झगड़ों में पूरी मानवता त्रस्त होती है। अतः मानव संस्कृति की रक्षा का एक मात्र उपाय वेद विद्या का प्रचार प्रसार और उसकी रक्षा ही है। ❒❒❒

आपकी सम्मतियाँ

शांतिधर्मी का जुलाई अंक मिला, अत्यंत आभार! पत्रिका शांतिधर्मी में प्रकाशित रचनाएँ पठनीय, जीवनोपयोगी सामग्री से ओतप्रोत हैं, इसमें संदेह नहीं। समाज में व्याप्त अन्धविश्वास व कुरीतियों को मिटाने के लिए भी शांतिधर्मी जैसी पत्रिकाओं का प्रकाशन अनिवार्य है।

सीताराम गुप्ता,
ए डी -१०६ -सी, पीतमपुरा,
दिल्ली- ११००३४

शांतिधर्मी पत्रिका निरंतर मिल रही है, बहुत अच्छे से स्तर बनाये रखे हुए है। सामग्री बहुत उपयोगी एवं रोचक होती है, एतदर्थ आपको और पूरी टीम के सतत समर्पण और पुरुषार्थ के लिये बधाई।

रामफल सिंह आर्य
78/3-4 BBMB सुन्दरनगर (हि० प्र०)

राष्ट्र चेतना को जाग्रत करने का पुनीत कार्य करने के लिए आप श्री और सहयोगियों को बहुत बहुत धन्यवाद ।

मनोहर सिंह राव पिता नवल सिंह राव
गाँव गंठेड़ी, पोस्ट पोटला, जिला चितौड़गढ़- ३१२६०२

खुशबू बिखराये शान्तिधर्मी!

चन्द्रभानु लेकर आये यह शान्ति धर्मी,
सबके तन-मन को महकाये यह शान्तिधर्मी।
घर आंगन में वन-उपवन में सकल भुवन में,
खुशबू अपनी बिखराये यह शान्तिधर्मी।
नर-नारी, बूढ़े, बच्चे और जवान,
सबके मन को भाये यह शान्तिधर्मी।
असमंजस में पड़े हुए, दिग्भ्रमित आर्य को,
सत्य की राह बताए यह शान्तिधर्मी।
किंकर्तव्यविमूढ है, होता जब मानव मन,
सही गलत का भेद कराये शान्तिधर्मी।
अंधकार, अज्ञान भरे इस नश्वर जग में,
ज्ञान पताका फहराये यह शान्तिधर्मी।
विषय-भोग में लगे हुये आसक्त जनों को,
मुक्ति मार्ग पर ले जाये यह शान्तिधर्मी।
अपनी संस्कृति की गौरवशाली महिमा को,
चिर अनंत तक गाये यह शान्तिधर्मी।

-राजेन्द्र चायल, चैन्नई (तमिलनाडु)

शांतिधर्मी है दे रहा सुविचार संस्कार।
घर घर में स्वाध्याय हो नित होवे विस्तार।।
लोक और परलोक का इससे मिलता ज्ञान।
घर-परिवार, समाज का करता है उत्थान।।

-बंसीलाल चावला, बहादुरगढ़

जुलाई अंक मिला, धन्यवाद। अंक में प्रकाशित विभिन्न चित्र दिवंगत माताजी की हमेशा याद दिलाते रहेंगे। एक बार फिर उनको शत शत प्रणाम। आत्मनिवेदन संपादकीय 'जीवन में आस्तिकता' लाजवाब है। आपने बहुत ही शानदार तरीके से आस्तिकता तथा नास्तिकता में भेद बताया है। वेद-मार्ग पर चलने वाला ही आस्तिक तथा वेदों को न मानने वाला व उनका निंदक नास्तिक कहा जाएगा। बेशक वेद तब लिखे गए थे जब कोई भी संप्रदाय, मत-मतांतर नहीं था। आज के जमाने में न जाने कितने पापी पाखंडी संत महंत बनकर, जो असल में नास्तिक है अपने आप को ईश्वर का अवतार बताकर दुनियावी भोग भोग रहे हैं, एक-दूसरे को नीचा दिखा रहे हैं- हमें इनसे सावधान रहते हुये सत्य की खोज में रहना चाहिए। जो कुछ भी वेदों में कहा गया है वह सत्य है, निर्विवाद है, सभी पर लागू होता है और सभी के भले के लिए है। वेदों के अनुसार दुनियावी ऐश्वर्य भोग-भोगने के लिए नहीं, मोक्ष प्राप्त करने तथा परलोक सुधारने के लिए हैं। वेद सत्य है। सत्य लचीला होता है, अपना मूल रूप खोता नहीं। वेद लोगों में मतभेद पैदा नहीं करते। वेद स्वयं परमात्मा की वाणी हैं, इसे कोई गलत, काल्पनिक तथा झूठ साबित नहीं कर सकता। आस्तिक आत्मसंतुष्ट, तृप्त, संयमी, विनम्र तथा परहितकारी होता है। दुनियादारी के हिसाब से भी आस्तिक होना ही ठीक है और नास्तिक होना व्यवहारिक भी नहीं है। नास्तिकता एक ऐसी कागज की नाव है जो भव सागर पार नहीं कर सकती। इस लाजवाब संपादकीय के लिए साधुवाद। देवदत्त देव की गजलें पसंद आईं। रामफल आर्य का लेख शिक्षाप्रद है। आज अधिकांश मां-बाप अपनी बिगड़ैल संतान से परेशान हैं। ऐसी संतान से अच्छे देशभक्त नागरिक होने की आशा नहीं की जा सकती। अच्छे संस्कारों से ही संतान को सुधारा जा सकता है। नरेंद्र आहूजा विवेक का लेख अच्छा लगा।

प्रोफेसर शामलाल कौशल
975 बी, ग्रीन रोड, शक्ति नगर, रोहतक १२४००१

यदि तूने अपना जीवन संवारना है।
जीवन में कभी न हारना है।
झूठ से कभी न डरना है।
मुश्किलों का सामना करना है।।
जीवन को सही रास्ते पर लाना है।
बच्चों को संस्कारवान बनाना है।।
तो जीवन में बनो निष्काम कर्मी,
पढ़ो और पढ़ाओ शांतिधर्मी।।

राजकुमार वर्मा प्रिंसिपल इक्कस
पटियाला चौक जींद

जून अंक सामने है। जीवन जीने का उद्देश्य मृत्यु के बाद के जीवन को सुधारना है। वर्तमान जीवन तो कल के जीवन की तैयारी के लिये मिला है। उस ओर तो हमारा ध्यान ही नही है। हमको संगतिकरण बनाकर जीना है। सबकी उन्नति में अपनी उन्नति तभी संभव है जब हम इस बात का ध्यान रखें कि हम न केवल बिना किसी को हानि पहुँचाये आगे बढें, बल्कि आगे बढ़ते समय अन्यों को भी आगे बढने में सहारा दें। पर्यावरण को बचाने का एकमात्र उपाय नित्य-प्रति घर-घर में सामूहिक रूप से वेद मंत्रों के सस्वर उच्चारण के साथ वैदिक यज्ञ का करना है। भारत की वर्त्तमान शासन प्रणाली जनता को चूसने तथा लूटने वाली है। महर्षि दयानंद द्वारा सुझायी गयी शासन व्यवस्था देश के लिए हितकारक है। आज का गृहस्थ अत्यन्त दु:खी है। कारण? आज हमनें पँच महायज्ञों को करना छोड़ दिया है। गृहस्थ आश्रम सभी आश्रमों का आधार है। जब आधार ही दु:खी है तो सभी दु:खी हैं। इसको रास्ते पर लाने की जरूरत है। अच्छी तथा शीघ्र नींद लाने का उपाय= चिन्ताओं को घर के बाहर छोड़कर घर में प्रवेश करें तथा दोनों समय संध्या करें। मैं इसका उदाहरण हूँ। बाल बाटिका तो सभी का मन मोह लेती है।

रामप्रसाद श्रीवास्तव,
5/259, विरामखंड गोमती नगर लखनऊ

अपनों से अपनी बात : शांतिधर्मी के पाठकों से निवेदन

सम्मान्य पाठकगण, यह आपके आत्मीय सहयोग से ही सम्भव हुआ है कि शांतिधर्मी नियमित प्रकाशन के २० वर्ष पूर्ण कर रहा है। यह हमारे लिये सन्तोष का विषय है कि आज इंटरनेट के युग में भी शांतिधर्मी देश भर में पढ़ा जा रहा है। विदेश में भी ऑनलाइन पाठकों का आशीर्वाद मिल रहा है। शांतिधर्मी के संस्थापक स्व० पिताजी श्री चंद्रभानु आर्य जी की नीतियों के अनुसार हमारा दृष्टिकोण भी अव्यवसायिक ही है। इसलिये इसका मूल्य भी न्यूनतम ही रखा गया है। विज्ञापन आदि के लिये भी हम कुछ प्रयास नहीं कर पाते हैं। पुनश्च सात्विकता का प्रचार ईश्वरीय कार्य है। यही इसकी निरन्तरता का रहस्य है। हम पूरी सावधानी से हर मास सभी पते जाँच कर पत्रिका डाक में प्रेषित करते हैं। कुछ पाठकों को पत्रिका नहीं मिल पाती है। इस समस्या से हम परिचित हैं। हम डाक विभाग को सुधार नहीं सकते हैं। तथापि आपसे निवेदन करते हैं कि-

१ एक स्थान पर १० या अधिक सदस्य होने पर किसी एक सदस्य के पास पैकेट रजिस्टर्ड डाक से भेजते हैं। इसका रजिस्टरी खर्च हम वहन करते हैं। रजिस्टरी और पैकिंग सहित यह लगभग ३००/- होता है। एक सदस्य का रजिस्टरी खर्च वहन करना हमारे लिये संभव नहीं है। यदि आपको अपनी प्रति साधारण डाक से नहीं मिल रही है और आप अपनी एक प्रति रजिस्टरी से मंगाना चाहते हैं तो अपने सदस्यता शुल्क में अतिरिक्त ३००/- जोड़कर भेजें। हम चाहेंगे कि आप आजीवन सदस्यता शुल्क भेजने की बजाय अपने आसपास के कम से कम दस सदस्यों का वार्षिक शुल्क भेजें। आपको एक वर्ष तक हर मास १० प्रतियाँ रजिस्टर्ड डाक से प्राप्त होंगीं। यह सहयोग कुछ पाठक कर भी रहे हैं।

२ २००४ से पूर्व के आजीवन सदस्यों को हम निरन्तर पत्रिका भेज रहे हैं। परन्तु उनसे हमारा प्राय: कोई सम्पर्क नहीं हो पा रहा है। उन्हें पत्रिका मिल रही है या नहीं, या उनके लिये इसकी कोई उपयोगिता भी है या नहीं? इसलिये उन मान्य पाठकों से प्रार्थना है कि अपने पते की पुष्टि हमारे ईमेल, व्हाट्स एप पर या फोन द्वारा शीघ्र करने का कष्ट करें। १५ वर्ष में बहुत परिवर्तन आ जाता है। कई महानुभाव निवास भी बदल लेते हैं। ऐसे में पते की पुष्टि न होने पर हमें पत्रिका भेजना बंद करना पड़ेगा।

३ इस सूचना के प्रकाशित होने के बाद से १०००/- दस वर्ष का शुल्क होगा, आजीवन नहीं।

आशा है आपका स्नेह बना रहेगा, और हम इस कार्य को और अधिक उत्साह से कर पायेंगे।

भवदीय **सहदेव समर्पित** सम्पादक

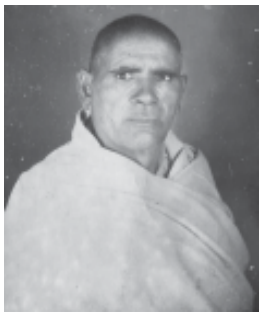

शांतिप्रवाह--- पुनर्प्रकाशन

अप्रैल २००४ अंक का सम्पादकीय

मन ही है बंधन और मोक्ष का कारण

❑स्व० पण्डित चन्द्रभानु आर्योपदेशक, संस्थापक शांतिधर्मी

प्रत्येक प्रगतिशील व बुद्धिमान व्यक्ति का यह दायित्व है कि वह संसार में शिव संकल्पों, सद्विचारों की ज्योति प्रज्ज्वलित रखने के लिए जागरूक हो, मनुष्य के शिव संकल्पों का सम्बन्ध आत्म कल्याण से ही नहीं, संसार के कल्याण से भी जुड़ा हुआ है।

मानव मन की गुत्थियों को सुलझाने के लिए संसार भर के वैज्ञानिक अनेक प्रयास करते आए हैं, जिन वैदिक वैज्ञानिकों (ऋषियों) ने मन के रहस्य को समझा है, उन्होंने मन के विषय में कहा है- 'मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयो:' मन ही मनुष्य के बन्धन और मोक्ष का कारण है। कठोपनिषद् में शरीर को रथ का रूपक देते हुए मन को इन्द्रिय रूपी घोडों की लगाम कहा गया है, जिसको बुद्धि रूपी सारथि को थामे रखना है। इन्द्रियों को उनके विषयों से रोकने के लिए मन एक माध्यम है। वास्तव में तो मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार, ये चारों अंत:करण एक ही चेतन आत्मा के आन्तरिक साधन हैं। इनमें जो बुद्धि को सारथि का स्थान दिया गया है वह इसलिए कि मनुष्य विचारपूर्वक कार्य करे तो इन्द्रियों के भोगों के दुष्परिणामों को देखकर उनसे विरत हो सकता है। यदि मन पर बुद्धि का नियंत्रण न रहा तो पतन अवश्यंभावी है। मानव-जीवन की यही अन्य प्राणियों से विशेषता है कि उसे परमात्मा ने बुद्धि दी है। यदि वह बुद्धि का उपयोग नहीं करता तो उसमें और पशु में कोई अन्तर नहीं है।

मन के सम्बन्ध में कुछ अर्वाचीन विचारक यह कहते हैं कि मन को बाँधा नहीं जा सकता है। इसके लिए वे प्राचीन विचारकों की अवज्ञा, अवहेलना करने से भी नहीं कतराते। वास्तव में वे यह सब अपनी दुकानदारी को चमकाने के लिए कहते हैं। नियंत्रण का अर्थ बाँधना नहीं है। नियंत्रण का अर्थ स्वेच्छापूर्वक उपयोग लेना है। स्वेच्छापूर्वक उपयोग लेने का अर्थ विषयों में डूबना नहीं अपितु उनसे तैरना है। प्रत्येक प्राणी की स्वाभाविक इच्छा दु:खों से छूटने की है। यही निर्णय बुद्धि को करना है कि अमुक कार्य बंधन में डालने वाला है या दु:खों से छुड़वाने वाला। इन्द्रियों के विषय-भोगों में रमने से मनुष्य बंधन में ही फंसता है, बल्कि अपने शरीर रूपी रथ को अनेक रोगों में फंसाकर नष्ट-भ्रष्ट कर डालता है।

मन के सम्बन्ध में वेद में कहा है कि जो हमारा मन जागते हुए ही नहीं, सोते हुए भी दूर-दूर तक जाता है, यह सभी इन्द्रिय रूपी ज्योतियों का प्रमुख है, यह हमारा मन उच्च शिव संकल्पों वाला हो। खेद है कि आज मनुष्य के सारे प्रयास, वैयक्तिक व सामाजिक रूप से मन के संकल्पों को बिगाड़ने में ही लगे हुए हैं। छोटे-मोटे लाभों के लिए किए जाने वाले छोटे-छोटे अनुचित कार्य मन की बहुमूल्य प्रवृत्तियों को बिगाड़ देते हैं। एक अनुचित कार्य के माध्यम से आया हुआ एक ही विकार का झोंका एक दिन एक भयानक तूफान का रूप धारण कर लेता है और मन की बसी-बसाई बस्ती को उजाड़कर रख देता है। जिस प्रकार दीवार पर कील गाड़ने से दीवार खराब हो जाती है-लेकिन वह कील निकालने पर भी वह दीवार खराब ही रहती है क्योंकि उसका छेद बना रहता है-उसी प्रकार अविवेकपूर्वक किए गए कार्य से मन पर उसके संस्कार की छाया अवश्य पड़ी रहती है। इसी प्रकार हमारे अन्दर जन्म जन्मान्तरों के अच्छे-बुरे संस्कार दबे पड़े होते हैं, जो अनुकूल परिस्थितियाँ पाकर पुन: उभर जाते हैं।

सामाजिक दृष्टि से भी आज मनुष्य पतन के मार्ग पर अग्रसर है। संयम, सदाचार और ब्रह्मचर्य की शिक्षा लुप्त सी हो गई है। सदाचार के मंदिर हमारे विद्यालयों और महाविद्यालयों में संस्कृति व सांस्कृतिक कार्यों, कार्यक्रमों के नाम पर जो होता है, या दूरदर्शन व आकाशवाणी पर जो कुछ प्रसारित होता है, वह हमारे समाज में व्यावहारिक रूप से आज भी स्वीकार्य नहीं है। जो कार्य मंच पर हो रहा है, वही कार्य यदि व्यवहार में होता है तो हत्याएँ/खून खराबे हो जाते हैं। लेकिन फिर भी वे सांस्कृतिक कार्यक्रम हैं? सदाचार और नैतिकता का यह अवमूल्यन समाज की सब जटिलताओं का कारण है।

यदि इस चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में नई पीढ़ी को ही संभाल लिया जाए तो बात बन सकती है अन्यथा तो कुछ समय बाद राष्ट्रवाद, नैतिकता, धर्म, सदाचार और संयम का नाम लेने वाले वही लोग बचेंगे, जिन्हें इनका नाम लेकर अपना व्यवसाय चलाना होगा।

आज प्रत्येक प्रगतिशील व बुद्धिमान् व्यक्ति का यह दायित्व है कि वह संसार में शिव संकल्पों, सद् विचारों की ज्योति प्रज्ज्वलित रखने के लिए जागरूक हो, मनुष्य के शिव संकल्पों का सम्बन्ध आत्म कल्याण से ही नहीं, संसार के कल्याण से भी जुड़ा हुआ है।

अनुशीलन

सामवेद : आग्नेय पर्व

नित नया और फिर पुराना

-लेखकः पं० चमूपति

इममूषु त्वमस्माकꣳसनिं गायत्रं नव्याꣳसम्।
अग्ने देवेषु प्रवोचः।। ८।। २८

ऋषिः-शुनः शेपः = ज्ञानी।

(अग्ने) हे अग्नि देव ! (त्वम्) तुम (अस्माकम्) हमारे (इमम्) इस (ऊ सु) प्रत्यक्ष (सनिम्) पुराने (नव्यांसम्) और फिर नित नये (गायत्रम्) भक्त की रक्षा करने वाले, गीत का (अस्माकम्) हमारी (देवेषु) प्रत्येक इन्द्रिय में (प्रवोचः) प्रवचन करो।

आज हमारे शरीर में एक आग-सी लग रही है। रोम-रोम चिंगारी सा बन रहा है। अंग-अंग से ज्वालाएँ-सी उठ रही हैं। हम विश्व-याग की आग के पतंगे से बन रहे हैं। हम वास्तव में सम्राट हैं। मानव-जाति का एक-एक व्यक्ति सम्राट् होने के लिए पैदा हुआ है। हमारा साम्राज्य शासन का नहीं, सेवा का है। वैर-विरोध का नहीं, सहयोग का, सहकारिता का, पारस्परिक स्नेह का साम्राज्य है। सिंहासन पर चाहे एक ही व्यक्ति बैठाया जाए, परन्तु उसके शासन में हिस्सा तो उन सब सज्जनों का रहेगा जो उसके विश्व-याग की आग की दीक्षा ले चुके हैं। सहयोग का साम्राज्य किसी अकेले मनुष्य से थोड़ा चल सकता है? यह साम्राज्य तो है ही समूह का, समुदाय का-नहीं, समस्त मानव-सन्तति का।

जब से विश्व-याग का सन्देश हमने देव-दूत अग्नि-देव की जाज्वल्य मान भाषा में सुना है, हमारी इन्द्रियाँ सचमुच देव बन गई हैं। देव अमर होता है। वह अनादि काल से अनन्त काल तक जीता है। यही अवस्था आज हमारी सम्पूर्ण इन्द्रियों की हो रही है। विश्व-याग का संगीत पुराना है--अनादि। इसका किसी युग में भी तो आरम्भ नहीं हुआ है। यह सृष्टि का संगीत है। जब-जब सृष्टि हुई है, तब-तब इस संगीत की गुंजार, संयुक्त हो रहे परमाणुओं के प्रत्येक पिण्ड से उठती रही है। संयोग का यह दिव्यनाद, सृष्टि की प्रत्येक प्रभात-बेला में नए उदित हो रहे सूर्य के साथ-साथ उदित हुआ है और प्रलय की प्रत्येक सांझ में पुराने अस्त हो रहे सूर्य के साथ-साथ अस्त हो गया है। अनादि काल से यह दिव्य-राग लय तथा उदय को प्राप्त होता चला आया है। इस प्रकार यह अलौकिक संगीत पुराना होता हुआ भी नित नया है। जिन देवताओं ने स्वयं अग्निदेव के मुख से इन भड़कीले, नशीले, सुरीले नाद को सुना है, वे स्वयं सनातन हो गये हैं-पुरातन हो गये हैं। पुरानों में सबसे पुराने और नयों में प्रति क्षण नए से नए।

यज्ञ की आग प्रतिक्षण यजमान का काया कल्प कर रही है। इस आग का उपासक बूढ़ा नहीं होता। सदा अजर-अमर बना रहता है। इस अमरता का रहस्य इसी काया-कल्प में है-प्रतिक्षण के नए-नए काया- कल्प में। याग का राग गानेवाला गायक सुरक्षित है। उसका त्राण उसके अमर राग द्वारा ही हो रहा है। **विश्व में जीने का अधिकार उसी का है जो विश्व हो जाये।** विश्व का याग नित्य है, उसकी आग भी नित्य है-और उस आग का राग भी।

हे मेरे जल रहे शरीर की नित नई-नई ज्वालाओं! गाओ। मेरी यह देह देवों की पुरी है। देवों के नाद सुनाओ। इस नाद की रचना हुई ही इन्हीं देवों के नाद के लिए है। तुम आचार्य हो, ये शिष्य। तुम प्रचवन करो, ये श्रवण=एक नित्य सनातन सन्देश, तुम्हारे और इनके बीच के अन्तराल को पाट दे। ये और तुम एक हो जाओ। मेरी सभी इन्द्रियाँ तुम्हारे संगीत की स्वर-लहरियाँ बन जाएँ। देव-दूत इन्हीं का दूत हो। सन्देश सुनता-सुनता इन्हें संदेश-मय कर दे और फिर इन्हीं के मुख से अपने दिव्य संदेश को सुने सनातन संदेश को अंगीकार कर सभी देव-दूत हो जाएं।

विश्व-याग के राज-सिंहासन पर पदार्पण कर सभी सम्राट बन जाएँ-स्नेही सम्राट्, सेवा- व्रती सम्राट। शासन सहयोग बन जाए। राज्य, सेवा ही का दूसरा नाम है।

हमारा साम्राज्य शासन का नहीं, सेवा का है। वैर-विरोध का नहीं, सहयोग का, सहकारिता का, पारस्परिक स्नेह का साम्राज्य है। सिंहासन पर चाहे एक ही व्यक्ति बैठाया जाए, परन्तु उसके शासन में हिस्सा तो उन सब सज्जनों का रहेगा जो उसके विश्व-याग की आग की दीक्षा ले चुके हैं।

आह्वान

पाञ्चजन्य घोष गुंजाओ!!

❐स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती
गुरुकुल प्रभात आश्रम

पाञ्चजन्य घोष हृषीकेश! फिर से गुंजाओ।
माँ भारती को कौरवों से मुक्त कराओ।।

अन्याय और अनीति पर हैं शत्रु तुल गये।
ये केश-वेश द्रौपदी के पुनः खुल गये।।
वध कराकर दुःशासन का इन्हें फिर से बंधाओ।।१।।

वंशीधर अब वंशी बजाने का समय नहीं,
संग ग्वाल-बालों के यहाँ खेल का नहीं।
चक्रधारी अब तो सुदर्शन चक्र उठाओ।।२।।

शकुनि के कपट पाश निशङ्क पड़ रहे।
अति हर्ष में दुर्योधन कर्ण खूब हंस रहे।
उस दुष्ट का वध शीघ्र सहदेव से कराओ।।३।।

कर्ण की कुमंत्रणा की अब बेल फल रही।
सन्मंत्रणा विकर्ण विदुर की नहीं रही।।
कह पार्थ को अब तो उसका शिरच्छेद कराओ।।४।।

गोहरण जैसे कुकृत्य में संग भीष्म द्रोण हैं।
दुर्योधन जैसे दुष्ट के ये दास बने हैं।।
इस पापमयी भावना से मुक्त कराओ।।५।।

दुर्योधन अन्धपुत्र अब मदान्ध हो गया।
उरु सगर्व खोल वह स्वच्छन्द हो गया।।
कह करके भीम से अब उसकी जंघा तुड़ाओ।।६।।

काल यवन जरासंध का आतंक बढ़ा है।
कीचक और जयद्रथ का उत्साह चढ़ा है।।
नाश करके उन सभी का यह राष्ट्र बचाओ।।७।।

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र, युद्धक्षेत्र हो गया।
आतंक का साम्राज्य ही सर्वत्र हो गया।।
बन करके पार्थसारथी अब युद्ध रचाओ।।८

गीता का गान करके धनञ्जय को जगाया।
स्व-कर्म पालने का उसे पाठ पढ़ाया।।
अब राष्ट्र धनञ्जयों को वह पाठ सुनाओ।।९

नवगीत

कलयुग के ऐसे पड़े चरण!

❐ज्ञानेन्द्र साज

बिगड़ गये है रामराज के सारे समीकरण
कलियुग के ऐसे पड़े चरण।
आज एक ही नहीं अनेकों रावण घर-घर में
कोई बाला नहीं सुरक्षित, घर या बाहर में
कौन बताए इन्हें राम के, युग के उदाहरण
कलियुग के कैसे पड़े चरण।
भाई-भाई के झगड़े में, केस चल रहे हैं
जिससे न्याय व्यवस्था के, सब लोग पल रहे हैं
जन्म नहीं लेते हैं भू पर, कहीं पे भी लक्ष्मण!
कलियुग के ऐसे पड़े चरण।
मात-पिता अब बोझ बन गए, बात कौन माने
तन्हाई में काट रहे दिन, रह कर अंजाने
बेटों को अब कौन बताए, रिश्ते/सदाचरण!
कलियुग के ऐसे पड़े-चरण!
पाप जमीं पे जड़ें जमाये, खुश-खुश होता है
पुण्य किसी कोने में बैठा, हर पल रोता है
वक्त कर रहा निज हाथों से, पाप का ही वितरण!
कलियुग के ऐसे पड़े चरण।
सूखा, बाढ़, भूख, भय, चोरी, तस्करी, घोटाले
रहजन, लूट, डकैत, दलाली, जीवन के लाले
जूझ रहे हैं सभी, कोई ना, करता निराकरण।।
कलियुग के ऐसे पड़े चरण!!

-सम्पादक-जर्जर कश्ती
१७/२१२, जयगंज, अलीगढ़-२०२००१

गजल

❐रमेश चन्द्र श्रीवास्तव

दूर मंजिल नहीं, हौसला चाहिए।
अब रुकावट है क्या, देखना चाहिए।
हम हवा की तरह हैं, ठहरते नहीं।
पर्वतों में भी, एक रास्ता चाहिए।
देश में ही जिएँ, देश पर ही मिटें।
जिन्दगी में हमें, और क्या चाहिए।
अग्निबाणों का प्रयोग, करना है अब।
अब हमें शत्रु का, सामना चाहिए।
'रचश्री' कोई भी जंग, हो यहाँ।
शूरवीरों की अब, वीरता चाहिए।

-एलआईयू, फतेहगढ़ (उ०प्र०)-२०९६०१

राष्ट्र-चिन्तन

मतान्तरण नहीं है समस्या का समाधान

❑राजेशार्य आट्टा, ग्रा० पो० आट्टा, जिला पानीपत

यदि 'धर्म' परिवर्तन का कारण सामाजिक अन्याय है तो हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि दूसरे मजहबों में ऐसी समस्याओं की कोई कमी नहीं है

पुरुषार्थ चतुष्टय को मानव-जीवन का उद्देश्य मानने वाले ऋषियों ने धर्म को सर्वप्रथम रखा और कहा कि काम, भय, लोभ आदि के वश में होकर कभी धर्म का त्याग नहीं करना चाहिए। सुख दुःख तो अनित्य हैं, धर्म नित्य है, आत्मा नित्य है, इसका हेतु (शरीर) अनित्य है। अनित्य के लिए नित्य का त्याग नहीं करना चाहिए। यह सत्य है कि वैदिक साहित्य में धर्म का अर्थ सदाचरण, कर्तव्यपालन आदि ही है- हिंदू, मुस्लिम, बौद्ध, ईसाई आदि नहीं। ये तो संप्रदाय या मत हैं, धर्म नहीं। पर जब से विदेशी इस्लाम आदि ने तलवार का डर व कुछ सुविधाओं का लालच दिखाकर भारत के निर्बल, निर्धन व अनपढ़ लोगों पर अपना मजहब थोंपना शुरु किया, तब से संप्रदाय धर्म की चादर ओढ़कर घूमने लगा। अर्थात् आचरण की अपेक्षा कुछ मान्यताएँ ही धर्म बन गई। वैदिक धर्म का विकृत स्वरुप (बौद्ध, जैन, पौराणिक आदि) हिंदू धर्म कहा जाने लगा। गौ, गंगा, गायत्री, गीता तथा देवी देवताओं के मंदिर-मूर्तियों के प्रति श्रद्धाभाव रखना ही हिंदू धार्मिकता का चिह्न बन गया। इस्लाम की क्रूरता व बर्बरता ने हिंदुत्व आस्था के इन प्रतीकों को तोड़ना व हिंदुओं को मोहम्मद पैगंबर के शासन (कुरान) के नीचे लाना (मुस्लिम बनाना) ही जन्नत (स्वर्ग) में सीट रिजर्व करना मान लिया।

भय के उस वातावरण में भी बहुत से धर्मवीरों ने अपने धर्म की रक्षा के लिए अपने शरीर को भी तृण के समान त्याग दिया था। फिरोजशाह तुगलक ने मूर्तिपूजक ब्राह्मण को मूर्ति के साथ जीवित जलवा दिया था, पर ब्राह्मण ने इस्लाम स्वीकार नहीं किया। वीर हेमू के पिता पूर्णमल ने मुसलमान बनना स्वीकार नहीं किया तो बैरम खान (या अकबर) ने उसके टुकड़े-टुकड़े करवा दिए। गुरु अर्जुनदेव ने इस्लाम स्वीकार नहीं किया तो जहांगीर ने उन्हें गर्म तवे पर बैठाकर मरवा दिया। शाहजहां ने जुझारसिंह के बेटों- उदयभानु और श्यामदेव को मुसलमान बनने से इंकार करने पर कत्ल करवा दिया। औरंगजेब ने जाट वीर गोकुला को मुसलमान न बनने के कारण कुल्हाड़ों से कटवा दिया, जबकि उसके पुत्र, पुत्री मुसलमान बना दिए गए। गुरु तेग बहादुर के साथ ही भाई मतिदास, सती दास व दयाला को भी इस्लाम स्वीकार न करने के कारण तड़पाकर मारा गया। गुरु गोविंदसिंह के बेटे जोरावर सिंह, फतेह सिंह व वीर बालक हकीकतराय ने धर्म के बदले जान दे दी। शिवाजी के बेटे संभाजी व बंदा बैरागी ने इस्लाम नहीं स्वीकार किया तो औरंगजेब ने उन्हें उनके अनेक साथियों सहित बुरी तरह तड़पाकर मरवाया। बंदा की पत्नी जबरन मुसलमान बनाकर राजवंश की एक बेगम को गुलाम के तौर पर दे दी गई।

ये तो इतिहास के वे उदाहरण हैं, जिन्हें इतिहासकार छुपाना भी चाहें तो भी नहीं छुपा सकते। बाद में भी ऐसे हजारों ज्ञात-अज्ञात धर्म रक्षा हित बलिदान देने वाले हुए हैं। आज के कुछ तथाकथित सेकुलरों को इसमें केवल राजनीति ही दिखाई देती है क्योंकि उनकी दृष्टि धर्म (हिन्दू) की चमक को सहन नहीं कर पाती, जैसे नेत्र के रोगी सूर्य की धूप को। उनके षड्यंत्रों के कारण ही अपने प्रेरक इतिहास को भुलाकर स्वतंत्र भारत के हिंदू आज छोटी सी समस्या आ जाने पर धर्म त्याग करने की धमकी दे देते हैं, फिर चाहे समस्या व्यक्तिगत हो, सामाजिक हो या राष्ट्रीय हो। (भूखे-नंगे, अनपढ़, गरीब, वनवासी हिंदू यदि कुछ सुविधाओं के बदले ईसाई बनते हैं तो कोठियों में रहकर ठाठ करने वाले स्वार्थी हिंदुओं पर लानत है।)

समस्या से जूझने वाले व्यक्ति की परेशानी हम समझते हैं, पर यह सत्य है कि बात-बात पर धर्म त्याग (मजहब परिवर्तन) करने की धमकी देने वाले लोगों का धर्म से कोई लगाव नहीं होता। वे तो बंदर की शरारत पर गाय को पीटने वाली बात करते हैं। संसार में ऐसे बहुत से आस्तिक देखे जाते हैं जो किसी कामना की पूर्ति के लिए परमात्मा (इष्ट देव) से प्रार्थना करते हैं और साथ ही यह भी कह देते हैं कि यदि मेरा काम पूरा नहीं हुआ तो तुम्हारे अस्तित्व से मेरा विश्वास उठ जाएगा। यह तो वही बात हुई जैसे कि कोई मालिक नौकर से कहे कि तुमने यह काम नहीं किया तो तुम्हें नौकरी से निकाल दिया जाएगा। यहाँ तो परमात्मा की स्थिति नौकर जैसी कर दी। धर्म को भी लोगों ने ऐसा ही समझ रखा है। आपस की लड़ाई का हल नहीं हुआ तो धर्म की परिभाषा भी न जानने वाले लोग कहते हैं कि हम धर्म त्याग कर देंगे। समाज की तरफ से दुर्व्यवहार,

अन्याय मिला तो धर्म त्याग कर देंगे और सरकार से अन्याय (उचित अनुचित मांग न मानी जाना) मिला तो धर्म त्याग कर देंगे। अर्थात् दोष किसी का भी हो, दंड धर्म को देंगे।

वास्तव में इनके पास धर्म होता ही नहीं, ये त्याग क्या करेंगे? (एक बार कोई जन्मना ब्राह्मण कह रहे थे- मैंने दुराचार भी किया, शराब भी पी, मांस भी खाया, चोरी भी की, हत्या में भी शामिल हुआ पर अपना धर्म नहीं छोड़ा। आज तक चौके में बैठकर ही भोजन किया है।) प्रचलित मान्यता के अनुसार यदि हिंदू/मुस्लिम आदि ही धर्म हैं तो सोचिए- क्या बात बात पर धर्म त्याग करने की धमकी (या वास्तव में मत परिवर्तन) कभी किसी ईसाई या मुसलमान ने भी दी है? अथवा यह लालच हिंदू ही दिखाते हैं? और क्या यह संभव है कि हिंदू धर्म को छोड़कर मुस्लिम या ईसाई बनने पर उनकी कोई समस्या नहीं रहेगी? यदि वहाँ भी कोई समस्या खड़ी हो गई तो क्या आप पुनः मजहब बदलेंगे? क्या धर्म गर्मी, सर्दी के कपड़े हैं जो अपनी सुविधा अनुसार बदलते रहोगे?

स्मरण रहे- धर्म बदलने के साथ व्यक्ति का बहुत कुछ बदल जाता है। आज जिसे वह गौ माता कहता है, कल उस माता का मांस खाने में भी उसे संकोच नहीं होगा। आज परिवार/रिश्तेदारी कि जिस लड़की को वह बहन कहता है, कल उसे पत्नी बनाने में भी संकोच नहीं करेगा। अतीत के जिन महापुरुषों (राम, कृष्ण, प्रताप, शिवाजी आदि) पर आज वह गर्वित होता है, कल उन्हीं पूर्वजों से घृणा करने लग जाएगा। कुछ तथाकथित धर्मनिरपेक्ष लोग प्रचार कहते हैं कि सब मजहब एक लक्ष्य=परमात्मा तक पहुंचने के अलग-अलग रास्ते हैं। (स्मरण रहे- रास्ते ही अलग नहीं है, सब सम्प्रदायों में परमात्मा के स्वरूप व स्थान की भी अलग-अलग कल्पनाएँ हैं।) सुनने में तो बड़ा अच्छा लगता है- 'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।' पर सत्य यही है कि इस गीत के रचयिता सर मोहम्मद इकबाल ने जब मजहबी चश्मा पहना तो उनकी राष्ट्रवादी भावना हिंदुओं के प्रति घृणा में बदल गई। 'सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा' गाने वाला कवि हिंदुओं से अलग रहने के लिए पाकिस्तान की मांग करने लगा। सर सैयद अहमद खान का अलग देश का विचार इकबाल के माध्यम से होता हुआ जिन्ना तक पहुंचा और मजहबी पागलपन में दूसरे धर्मों के लोगों को निर्दयी होकर मारा, काटा व जलाया गया। इकबाल के पिता हिंदू पंडित थे। उनको किसी मामले में फंसा कर सजा दी गई, बचने के लिए वे मुसलमान हो गए और लाहौर जा बसे। जिन्ना के पूर्वज भी हिंदू थे, मजहब बदला तो देश तक बदल गया।

जो लोग सरकार पर उचित या अनुचित दबाव डालने के लिए धर्म परिवर्तन की धमकी देते हैं, उन्हें सोचना चाहिए कि आज भारत की अधिकतर राजनीतिक पार्टियां धर्मनिरपेक्षता (भारत में इसका अर्थ है- केवल हिंदुत्व का विरोध करना) का चोला ओढ़े हुए हैं। अतः उन्हें तो केवल आपका वोट चाहिए। आपके मजहब से उन्हें कुछ लेना-देना नहीं है। हाँ, देश का नुकसान अवश्य होगा, क्योंकि फिर मजहब बदलने वाले की आस्था विदेशी महापुरुषों की विचारधारा से जुड़ जाएगी। फिर उन्हें अपने देश से गद्दारी करने में भी परहेज नहीं होगा।

यदि धर्म परिवर्तन का कारण सामाजिक अन्याय (जाति- पाँति के कारण) है तो हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि दूसरे मजहब में भी शिया-सुन्नी जैसे एक दूसरे के खून के प्यासे हैं। अहमदिया संप्रदाय जैसों को मुसलमान ही नहीं माना जाता। ईसाइयों में भी कई खेमे हैं। अतः इस बात की कोई गारंटी नहीं दे सकता कि वहाँ जाने पर अन्याय बिल्कुल नहीं होगा।

डॉक्टर अंबेडकर के सामने ऐसी विकट परिस्थिति थी कि उन्हें मजबूर होकर मत-परिवर्तन करना पड़ा। उसमें भी लगभग २१ वर्ष खूब चिंतन मनन करके, जिसमें राष्ट्र का कम से कम नुकसान लगा, वह बौद्ध मत अपनाया था। (बौद्ध मत भारत की धरती पर पैदा हुआ, हिंदुओं की अधिकतर मान्यताओं से जुड़ा हुआ संप्रदाय है) पर आज डॉक्टर अंबेडकर के नाम की आड़ लेने वालों ने मत परिवर्तन करना फैशन बना लिया है। डॉक्टर अंबेडकर बौद्ध बनने से पूर्व श्रीलंका, म्यांमार आदि देशों में होने वाले विश्व बौद्ध सम्मेलनों में भाग लेकर, सैद्धांतिक जानकारी ले चुके थे और बौद्ध मत की शिक्षाओं से प्रभावित होकर बौद्ध बने थे, जबकि आज उनके नाम पर मनु व मनुवाद को गालियां देकर व हिंदू धर्म के कर्णधारों पर जातिवाद, शोषण व अत्याचार का आरोप लगाकर हिंदू धर्म त्याग कर बौद्ध धर्म अपनाया जा रहा है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि आज का बौद्ध मत मांसाहार में आकंठ डूबकर अहिंसा की मूर्ति महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं से बहुत दूर जा चुका है। पर यह भी सत्य है की स्वार्थ और बदले की राजनीति से प्रेरित होकर बौद्ध बने नव बौद्ध उस बौद्ध से भी दूर हैं। भारत के इस नवबौद्ध आंदोलन में बुद्ध से अधिक महत्व डॉक्टर अंबेडकर का है। सन १९९२ में श्रीलंका के उच्चायुक्त नेविन कानकर रत्ने ने अपनी सरकार को साफ शब्दों में सूचित किया कि अधिकांश भारतीय बौद्ध अनुसूचित जातियों के लोग हैं, जो

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

ग्यारह आत्महत्या या हत्या??

❒**रामपाल सिंह आर्य** ७८/३-४ बी बी एम बी कालोनी सुन्दरनगर (हि० प्र०)

सत्य विद्या के प्रचार के अभाव में मानव समाज पूरी तरह से भटक चुका है। स्वार्थी, दंभी और पाखंडी लोगों ने नए-नए हथकंडे अपनाकर लोगों को इतना भ्रमित कर डाला है कि उन्हें बिल्कुल अंधा ही बना दिया है।

देश की राजधानी दिल्ली के बुराड़ी में संतनगर में रहने वाले भाटिया परिवार के ११ लोगों की एक साथ हुई मृत्यु के समाचार ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया। इस घटना से जहाँ एक ओर परिवार के सभी लोगों की यूँ एक साथ हुई मृत्यु से दुःख उत्पन्न होता है वहीं दूसरी ओर आश्चर्य भी होता है कि किस प्रकार से एक हंसता खेलता परिवार अंधविश्वास की भेंट चढ़ कर एक समय में विनाश को प्राप्त हो गया। जिसने भी दूरदर्शन या समाचार पत्रों के माध्यम से इस घटना को जाना वह यह विचारने पर विवश अवश्य ही हुआ कि क्या आज के इस युग में भी ऐसे लोग हैं जो नितांत निरर्थक, निराधार और बुद्धिविरुद्ध बातों पर विश्वास करके इतना भयानक कर्म कर डालते हैं! पुलिस और जांच दलों द्वारा जो निष्कर्ष निकल कर आए हैं उनसे यही सिद्ध होता है कि भाटिया परिवार के ही एक पुत्र द्वारा आत्माओं का आह्वान किए जाने के फलस्वरूप दी गई निरंतर प्रेरणा से ही यह घोर कर्म किया गया, जिसमें परिवार में पीछे कोई रोने वाला भी शेष न रहा।

सारे समाचार चैनल इसे अंधविश्वास जनित कार्य बताकर इसकी समीक्षा में लग गये। यहाँ तक कि कई समाचार चैनलों ने तो देश के धार्मिक जगत् से जुड़े बाबाओं/गुरुओं की परिचर्चा भी बुला डाली। प्रत्येक चैनल पर यह समाचार प्रमुखता से छाया रहा और लोग भी इस बात की प्रतीक्षा करते रहे कि देखें- जाँच दलों द्वारा क्या तथ्य निकलकर सामने आते हैं। ऐसा लगने लगा कि टीवी चैनलों ने अंधविश्वास को समाप्त करने के लिए कमर कस ली है। परन्तु कितने घोर आश्चर्य की बात है कि जो टीवी चैनल आज विज्ञान के युग की दुहाई देते नहीं थकते थे और इस अंधविश्वास की घटना को कोसने में सारी शक्ति लगाते दिखाई दे रहे थे, उन्हीं चैनलों पर प्रातः काल और सायंकाल चमत्कारी बाबाओं, श्रीयंत्र, शनि यंत्र, गणेश यंत्र, लक्ष्मी यंत्र, सिद्ध मनोकामना यंत्रों का प्रचार भी खूब धड़ल्ले से हो रहा है। चमत्कारी बाबाओं, फिल्म अभिनेता एवं अभिनेत्रियों के माध्यम से पाखंड को बढ़ावा देने वाले अनेक कार्यक्रमों का प्रसारण भी कम नहीं है। यह कैसा विज्ञान का युग है? इस दोगलेपन का अर्थ भला क्या है?

आज तथाकथित बाबाओं और गुरुओं का बोलबाला है। उनके पास लाखों लोगों की भीड़, करोड़ों-अरबों रुपए की संपत्ति है और देश के प्रभावशाली लोगों का संरक्षण उन्हें प्राप्त है। उनके एक संकेत पर उनके शिष्य कुछ भी करने के लिए तत्पर रहते हैं। ऐसा नहीं है कि उनके शिष्य मंडल में निरे अशिक्षित लोग ही हैं, अपितु अच्छे उच्च शिक्षित, उच्च पदों पर बैठे समर्थ लोग, उद्योगपति, नेता और अधिकारियों की पर्याप्त संख्या है। बाबाओं और अम्माओं का एक पूरा दल है जो किसी शक्तिशाली अजगर की भाँति उनको लपेटे हुए है और वे प्रसन्नतापूर्वक उससे लिपटे हुए हैं। ज्योतिषियों, तांत्रिकों, धर्मगुरुओं, कथाकारों, झाड़-फूंक करने वालों, वशीकरण एवं मनोकामना सिद्ध करने वालों का एक ऐसा ताना-बाना बुना जा चुका है जिससे इस समाज का निकलना असंभव सा दिखाई देता है। यह एक विकराल समस्या बन चुकी है।

यदि इस सारे मकड़ जाल को ध्यान में रखकर बुराड़ी की इस घटना को देखेंगे तो पता चलेगा कि वास्तव में उन लोगों ने आत्महत्या नहीं की है अपितु समाज में फैली इस प्रदूषित विचारधारा तथा पाखंड और अंधविश्वास का प्रचार करने वाली इन सभी संस्थाओं ने उन्हें इस ओर धकेल दिया है, या कहें कि उनकी हत्या कर डाली है तो कोई अनुचित बात नहीं होगी।

कहा जाता है कि भाटिया परिवार के पुत्र के ऊपर आत्मा आती थी जो उस परिवार के लोगों को मोक्ष दिलाने की ओर प्रेरित करती थी। उसी की प्रेरणा से प्रेरित होकर उन लोगों ने यह घोर कर्म किया। समाज में आत्मा को लेकर जो भ्रांति फैला दी गई है, उसमें भी टीवी और सिनेमा का बहुत बड़ा हाथ है। इस भ्रम में उलझे लोग न तो आत्मा का स्वरूप ही समझते हैं और न ही परमात्मा के बारे में कुछ भी जानते हैं। रही मोक्ष की बात, तो वह कोई वस्तु नहीं है कि किसी स्थान पर जाने से रखी हुई मिल जाएगी या किसी

बाबा या तांत्रिक की बताई हुई विधि वहाँ तक पहुंचा देगी। मोक्ष एक स्थिति विशेष का नाम है जो लगातार कठोर साधना, तपस्या और शुभ कर्मों के परिणामस्वरुप आत्मा अपने पुरुषार्थ और भगवत् कृपा से प्राप्त करता है। इस प्रकार से आत्महत्या करके मोक्ष कभी प्राप्त नहीं किया जा सकता। आत्महन्ता व्यक्ति तो समाज, राष्ट्र, न्याय, विधि और स्वयं का भी अपराधी बन जाता है, पापी बन जाता है।

ये महामूर्ख तांत्रिक बाबा और तथाकथित गुरु क्या मोक्ष को, क्या आत्मा और क्या परमात्मा को जानेंगे? यदि ये कुछ जानते हैं तो इतना अवश्य और भली प्रकार जानते हैं कि किस प्रकार से भोले-भाले लोगों को अपने जाल में फंसा कर अपना उल्लू सीधा करना है। इन ढोंगी, पाखंडी और स्वार्थ-मूर्तियों ने तो लोगों से विचार एवं तर्क की शक्ति छीन कर उन्हें मानसिक रूप से विकलांग ही बना डाला है।

जहाँ पर लोग केवल लाल या हरी चटनी के साथ समोसा खाकर जीवन की समस्याओं का हल ढूंढ लेना चाहते हों, जहाँ पर बाबा की कृपा आकाश से धीरे-धीरे उतरकर ऐसे आती हो जैसे आकाश से वायुयान उतरता है, जहाँ पर अनेक उच्च शिक्षित लोग जाकर निरे बुद्धू और मूर्ख बन जाते हों और एक पाखंडी का चरण-चुंबन करने लग जाते हों, क्या वहाँ के लोग तर्कशील, बुद्धिमान, पुरुषार्थी बनकर ईश्वर की न्याय व्यवस्था को जानकर, पाप के फल दु:ख से बचने की अपेक्षा पाप कर्म छोड़ने का कष्ट करेंगे? कदापि नहीं। क्यों? क्योंकि वे समझते हैं कि तुम्हारे कर्म चाहे कैसे भी क्यों न हों, बचाने के लिए बाबा तो बैठा ही है, जाकर उसके पैर पकड़ लेंगे। बस सारा कल्याण स्वत: ही हो जाएगा।

जहाँ पर खूब सजी-धजी सुन्दरी मेकअप आदि करके भक्तों की गोद में आकर बैठ जाती हो, उनके साथ डेट पर भी जाती हो और भक्त लोग विपुल धनराशि के बदले उससे कुछ भी खरीद सकते हों, आश्चर्य है कि इतना होने पर भी वह धर्म प्रचारिका बनकर 'मां' कहलाए और उसकी पूजा की जाए! उस समाज का कल्याण भला कैसे हो सकता है? क्या वहाँ समाज के लोग सदाचारी, संयमी और तपस्वी बनेंगे? नितांत असंभव है।

प्रतिदिन एक नए बाबा का नग्न स्वरूप जनता के सामने उजागर होता है। एक नया कांड उभर कर आता है। लोग सुनते हैं, देखते हैं और बहुत शीघ्र ही उसे भूल कर फिर किसी पाखंडी का दरवाजा खटखटा देते हैं। हमें तो यही समझ नहीं आता कि आखिर लोगों का विवेक कहाँ जाकर खो गया है! क्यों नहीं वे आंखें खोल कर सत्य को देखना चाहते? क्यों बार-बार इन धूर्तों के छलावे में आ जाते हैं? मनोकामना पूर्ण कराने वाले, बिगड़ी बनाने वाले, भूत-प्रेत, चुड़ैल आदि के माध्यम से लोगों के कार्य बनाने या बिगाड़ने वाले, काले जादू से लोगों को सिद्धि दिलाने वाले करामातियों के विज्ञापनों से रेलवे स्टेशन, बस अड्डे एवं अन्य सार्वजनिक स्थानों के साथ-साथ समाचार पत्रों के पन्ने रंगे रहते हैं। टीवी चैनल भी उनका प्रचार करने में पीछे नहीं हैं। अत: उनके पास जाने वालों की भी एक लंबी पंक्ति है। इतना सब कुछ होने पर भी कहते हैं कि यह विज्ञान का युग है!

वास्तव में बात तो यह है कि आज सत्य विद्या के प्रचार के अभाव में मानव समाज पूरी तरह से भटक चुका है। स्वार्थी, दंभी और पाखंडी लोगों ने नए-नए हथकंडे अपनाकर लोगों को इतना भ्रमित कर डाला है कि उन्हें बिल्कुल अंधा ही बना दिया है। आज सत्य बात करने वाला व्यक्ति उन्हें झूठा, और पाखंड की बात करने वाला सच्चा दिखने लगा है। जब इन दुष्ट लोगों द्वारा उनके धन, शील और मान-मर्यादा का हरण कर लिया जाता है, तब अपना माथा पकड़ कर रोने के अतिरिक्त उनके पास कोई रास्ता बचता ही नहीं। समाज को गलत मार्ग पर ले जाने वाले लोग केवल बुराड़ी के ११ लोगों के हत्यारे नहीं हैं, अपितु पूरी मानव जाति के शत्रु हैं, समाज के अपराधी हैं- चाहे जांच एजेंसियों के ध्यान में यह बात आए या न आए, परंतु यही सत्य है। इस घटना के मूल में पाखंडी लोगों की ही लीला है। आत्महत्या तो उन ११ लोगों ने की है, परंतु इस कृत्य तक जिस विचारधारा ने उन्हें पहुंचाया है, वह भी उतनी ही दोषी है।

इस विषय में पूरे समाज को एक गहन चिंतन की आवश्यकता है जिससे कि इस दूषित मानसिक दासता से मुक्ति मिल सके। स्मरण रखिए-

१ आत्मा एक निराकार, चेतन, अल्पज्ञ, अनादि, अविनाशी सत्ता है, जिसे कार्य करने के लिए शरीर की आवश्यकता होती है, और यह शरीर मिलता है ईश्वरीय व्यवस्था से। वह स्वयं शरीर धारण या त्याग नहीं कर सकता। हाँ, कभी-कभी मूर्खता के कारण लोग आत्महत्या कर लेते हैं, पर वह भी स्वाभाविक स्थिति नहीं है।

२ ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, चेतन सत्ता है जो उचित अनुचित कर्मों का फल आत्मा को देता है।

३ मोक्ष जीवात्मा प्राप्त करता है- एक लंबे, कठिन और उच्च कोटि के योगाभ्यास से। केवल शरीर को त्याग देना मोक्ष नहीं है। इन सभी बातों को जानने के लिए ऋषियों के बनाए ग्रंथ एवं वेदादि में लिखे हुए सिद्धान्त को योग्य एवं अनुभवी व्यक्ति से जानना आवश्यक है।

व्यक्तित्त्व विकास

कार्य कठिन नहीं होता, कमजोर सोच होती है

❑**सीताराम गुप्ता,** डी-१०६-सी, पीतम पुरा, दिल्ली-११००३४ फोन नं ०९५५५६२२३२३

हम प्रायः कहते हैं कि सोचना जितना आसान है कार्य करना उतना ही कठिन है। ऊपरी तौर पर यह बात ठीक लगती है लेकिन सोचना भी उतना आसान नहीं जितना ऊपर से लगता है। कार्य करना कठिन है तो सोचना भी कम कठिन नहीं। हाँ, कार्य करना थोड़ा कठिन हो सकता है। प्रश्न उठता है कि जो कार्य हम करते हैं वह क्यों होता है? कर्म की उत्पत्ति का क्या कारण होता है? कार्य कारण सिद्धांत के अनुसार हर क्रिया का कोई कारण अवश्य होता है। हर कार्य के पीछे एक कारण होता है और सबसे प्रमुख कारण हमारी सोच ही होती है। बिना मन में विचार किए या आए कोई भी कार्य प्रारंभ करना संभव नहीं। जब मन में विचार आता है तभी कार्य की रूपरेखा बनती है। जैसी रूपरेखा वैसा कार्य। जब मन में किसी बड़े कार्य की रूपरेखा बनती है तो बड़ा कार्य संपन्न होता है और जब किसी महत्त्वहीन कार्य की रूपरेखा बनती है तो महत्त्वहीन कार्य संपन्न होता है। जब हमारा चिंतन सार्थक व उपयोगी होता है तो उसके परिणामस्वरूप जो सृजन होता है वह भी सार्थक व उपयोगी ही होता है।

वैसे हम दिन भर सोचते ही तो रहते हैं। कभी कुछ तो कभी कुछ। कभी सायास तो कभी अनायास। और जिसके पास कुछ काम नहीं होता वो सोचते रहने के सिवा करें भी तो क्या करें? बड़ा आसान है इस प्रकार का सोचना, लेकिन क्या ऐसे सोचने से कुछ लाभ मिलता है? यदि हम जीवन में कुछ करना चाहते हैं और अच्छा करना चाहते हैं तो हमें अपनी सोच को उसी के अनुरूप अच्छा बनाना होगा। कोई भी कार्य हमें कठिन लगता है अथवा उसमें सफलता नहीं मिलती तो इसका सीधा सा अर्थ है कि हमारी सोच ही उस कार्य के अनुरूप नहीं है। कार्य कभी कठिन नहीं होता हमारी सोच में कमी होती है। जब तक हमारी सोच में स्पष्टता, सकारात्मकता व सार्थकता के साथ दृढ़ निश्चय नहीं होगा, हम जीवन में पूरी तरह से सफल नहीं हो सकते क्योंकि सही सोच के अभाव में हमें कार्य कठिन प्रतीत होते रहेंगे। जीवन में प्रसन्नता व सफलता पाने के लिए सही सोच का विकास करना अनिवार्य है।

हममें से अधिकांश लोग एक निश्चित अथवा पूर्व निर्धारित सीमित दायरे में रहकर सोचने के आदी होते हैं। हमारी सोच की एक सीमा होती है जिसे दुर्भाग्यवश जाने -अनजाने में हम स्वयं ही निर्धारित कर लेते हैं। हमारा परिवेश भी इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यही सोच हमें बहुत आगे बढ़ने से रोके रखती है। वास्तविकता यह है कि मनुष्य जो सोच ले वही कर सकता है। न सफलता अथवा कार्य की कोई सीमा होती है और न सोच की। कार्य को सरल बनाने, बड़े-बड़े कार्य करने व सार्थक, सकारात्मक एवं उपयोगी कार्य करने के लिए हमें उसी तरह की सोच विकसित करनी होगी। सोच ही व्यक्ति को प्रगतिशील बनाने में सक्षम है तो सोच के कारण ही व्यक्ति जीवनभर पुरातनपंथी बना रहता है। बिना सोच बदले कठिन कार्य करना तो दूर हम नए फैशन के कपड़े भी नहीं पहन सकते। सोच को बदलना आसान नहीं लेकिन असंभव बिल्कुल नहीं। हम प्रयास करके अपनी सोच को बदलकर बेहतर बना सकते हैं और बेहतर सोच से बेहतर जीवन बना सकते हैं। क्या यह कम महत्त्वपूर्ण है?

सोच को बेहतर बनाने के लिए हमें अपने सोचने के तरीके में बदलाव करना चाहिए। जब भी मन में कोई विचार उठता है तो उसका ध्यानपूर्वक अवलोकन/विश्लेषण करना चाहिए। क्या यह विचार और इससे उत्पन्न कर्म मेरे लिए ठीक होगा? क्या यह समाज व राष्ट्र के हित में होगा? यदि हम ऐसा कर पाते हैं तो न तो हम कोई गलत कार्य ही करेंगे और न कोई कार्य कठिन ही रहेगा। लेकिन क्या यह इतना सरल है? बहुत कठिन है गलत सोच को बदलना और सही सोचना। लेकिन असंभव नहीं। अभ्यास से सब कुछ संभव है। सब कुछ सरल बन जाता है। मन में विश्वास उत्पन्न करना पड़ता है कि मैं हर कार्य कर सकता हूँ। ऊंचे लक्ष्य निर्धारित करने की योग्यता व क्षमता का विकास करना पड़ता है। यह कार्य तो बहुत बड़ा है, मुझसे नहीं हो पाएगा- इस प्रकार की निराशाजनक सोच व संशय से मुक्त होना पड़ता है। जब हम अपने मन को यह विश्वास दिला देते हैं कि दुनिया का कोई भी कार्य यदि कोई भी व्यक्ति कर सकता है तो मैं भी अवश्य कर सकता हूँ और करके ही दम लूंगा तो कोई भी कार्य कठिन नहीं रह जाता।

कुछ लोग सामान खरीदने के लिए जब बाजार जाते हैं तो एक निश्चित राशि ही लेकर जाते हैं। यदि उस सामान

की कीमत बढ़ जाती है तो वे वापस लौट आते हैं। खरीददारी उनके लिए संभव नहीं हो पाती। संकुचित बजट हो या संकुचित सोच; दोनों के परिणाम निराशाजनक ही होते हैं। जिस प्रकार मुफ्त कुछ नहीं मिलता अथवा कम पैसों में अच्छा सामान नहीं मिलता, उसी प्रकार निरंतर प्रवहमान मुफ्त बराबर आसान अथवा सामान्य सोच से भी बड़ी उपलब्धि संभव नहीं। धन से अमीर व्यक्ति ही महंगी चीजें खरीद पाता है और सोच से अमीर व्यक्ति ही हर प्रकार की सफलता प्राप्त कर पाता है। पारंपरिक कमजोर सोच को बदल कर नया इतिहास रच डालिए।

जीवन में मनचाही सफलता के लिए जैसी सोच चाहिए वह कठिन अवश्य है लेकिन असंभव नहीं। जब हम ये कहते हैं कि यह कार्य तो हम बिल्कुल नहीं कर सकते तो आसान होने पर भी वह कार्य नहीं किया जा सकता। हमारी सोच के कारण वह कार्य मुश्किल लगता है वरना दुनिया में जो कार्य कोई भी एक व्यक्ति कर सकता है अन्य लोग या हम क्यों नहीं कर सकते?

नेपोलियन एक कम पढ़ा-लिखा व्यक्ति था, लेकिन वह एक प्रेरक वक्ता व लेखक बनना चाहता था। उसकी भाषा एक अच्छा लेखक बनने लायक नहीं थी, लेकिन उसने दृढ़ निश्चय कर लिया कि लेखक ही बनना है। यह असंभव सा फैसला था। उसने असंभव शब्द को ही शब्दकोष से काटकर फेंक दिया और फिर अपने मन से उसे मिटा दिया। नेपोलियन हिल की प्रेरक वक्ता एवं लेखक बनने की सोच एवं दृढ़ संकल्प ने ही उसे दुनिया का सफलतम प्रेरक वक्ता एवं लेखक बना दिया। इसमें संदेह नहीं। जो लोग यह कहते हैं कि इस कार्य को तो मैं करके ही रहूँगा, वे हर हाल में उस कार्य को कर लेते हैं चाहे वह कितना भी कठिन क्यों न हो। यह सोच का ही परिणाम होता है कि कुछ लोग असंभव से कार्यों को भी करने में सफल हो जाते हैं। हर नया काम, हर नई खोज अथवा हर नया रिकार्ड- बड़ी सोच का ही परिणाम होता है। ❐

श्री अटलबिहारी वाजपेयी का आर्यसमाज से सम्बंध

आर्यसमाज के लखनऊ अधिवेशन में संबोधित करते हुए श्री अटलबिहारी ने कहा था- मैं बचपन में अपने दादाजी की अंगुली पकड़कर आर्यसमाज में जाता था। आर्यसमाज में मैंने बोलना सीखा। उन्होंने भावुक होकर कहा था कि आर्यसमाज ने मुझे क्यों छोड़ दिया।

श्री अटलबिहारी वाजपेयी के बाल्यकाल पर दृष्टिपात किए बिना उनके व्यक्तित्व की विराटता को समझ सकना कठिन है। महान व्यक्तित्व की बुनियाद तो वस्तुत: बाल्यकाल में रख दी जाती है। आगरा जिले में यमुना नदी के तट पर बसा हुआ बटेश्वर नाम का गांव अटल बिहारी वाजपेयी जी का गांव है। अटलबिहारी के बाबा श्याम लाल वाजपेयी और पिता कृष्ण बिहारी वाजपेयी का परिवार आर्यसमाज आंदोलन के संस्कारों से ओतप्रोत था। कृष्ण बिहारी वाजपेयी ग्वालियर में अध्यापक नियुक्त हुए और अटलबिहारी का जन्म ग्वालियर में हुआ। अटल जी कहते थे कि बाल्यकाल में उन पर स्वामी दयानंद सरस्वती और आर्यसमाज का बहुत प्रभाव पड़ा। वे आर्य कुमार सभा के महासचिव भी नियुक्त हुए। वे स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने तक ग्वालियर में ही रहे। एक टीवी साक्षात्कार में उन्होंने कहा था कि सत्यार्थप्रकाश का उनके ऊपर गहन प्रभाव हुआ। अटलबिहारी आर्यसमाज की पृष्ठभूमि से आए क्रांतिकारी रामचंद्र सरवटे के गहन गंभीर संपर्क में आए।

अटल बिहारी वाजपेयी ने १९४२ के भारत छोड़ो आंदोलन में करो या मरो के नारे से प्रेरित होकर आंदोलन में भागीदारी की। युवा अटल को कारागार में भेज दिया गया। तब वे मात्र १७ साल के थे। झांसी के निवासी और चंद्रशेखर आजाद के परम शिष्य भगवानदास माहौर से भी वे अत्यंत प्रभावित हुए थे। भगवानदास माहौर ने अंडमान जेल से रिहा होने के पश्चात् पीएचडी की और प्रोफेसर बने। अटलजी राजनीति शास्त्र में एमए करने कानपुर गए थे। वहाँ उनका संपर्क राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से हुआ और उनकी मुलाकात पंडित दीनदयाल उपाध्याय से हुई। लखनऊ में अटलजी नानाजी देशमुख के निकट आए और फिर भारतीय जनसंघ के संस्थापक डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी के परम प्रिय शिष्य बने। वे मासिक पत्रिका राष्ट्रधर्म के संपादक बने। दैनिक वीर अर्जुन और साप्ताहिक पाञ्चजन्य का संपादन भी किया। कश्मीर में श्री श्यामाप्रसाद मुखर्जी का बलिदान ही वह प्रस्थान बिंदु है जहाँ से अटल बिहारी राजनीतिक पथ पर चले। उन्होंने १० बार लोकसभा चुनाव जीतकर इतिहास बनाया। पंडित नेहरू तक सारे काम छोड़कर उनके वक्तव्य को सुनते थे। संस्कृति की विराटता से ओतप्रोत अटल जी ने महाप्रयाण किया, किंतु अपनी दिव्य शख्सियत के पदचिह्न इतिहास पर अंकित कर गए जो कि आने वाली पीढ़ियों का मार्गदर्शन करते रहेंगे। प्रभात कुमार राय; साभार हरिभूमि (सम्पादित)

रात के ११ बजे थे। मैं अपनी ड्यूटी पर एक मोर्चे में खड़ा था तभी अचानक नजदीक एक झाड़ी में कुछ आहट हुई। मैंने आवाज लगाई कि कौन है। लेकिन उधर से कोई जवाब न मिला। मेरा हथियार बिल्कुल तैयार था और ऐटोमैटिक हथियार की गुणवत्ता यह थी कि एक बार ट्रीगर दबाने पर ही तीन गोलियाँ निकलतीं। मैंनें दो बार आवाज लगाई लेकिन फिर भी कोई जवाब नहीं। मैं उसका इंतजार करने लगा तो कुछ समय बाद देखा कि यह एक आवारा पशु था, हालांकि उत्तर न मिलने पर ही गोली के आदेश थे। यह स्थिति भारत के ताज जम्मू की थी।

----अगस्त को सुबह ४:३० बजे हमारे कैंट के नजदीकी कैंट की एक बटालियन में दो आतंकवादी घुसे। दोनों ने फौजी वर्दी पहनी हुई थी और दोनों ड्यूटी दे रहे संतरी के सामने पहुँचे। फौजी वर्दी होने के कारण संतरी असमंजस में था और उसने उन्हें रोककर अपनी पहचान बताने को कहा लेकिन उन्होंने अपनी पहचान बताने की बजाए संतरी पर गोलियाँ चलाई और संतरी वहीं ढेर हो गया। फिर वे दौड़ते आगे बढ़े और दूसरे संतरी को मार दिया जोकि आवाज सुनकर वहाँ भागा आ रहा था। आगे वे उन लाईनों में घुस गए जहाँ पर निहत्थे फौजी आराम कर रहे थे। कोई सो रहा तो कोई बाथरूम में था और कोई दाढ़ी बना रहा था। कई फौजियों को उन्होंने वहीं ढ़ेर किया और कई घायल हो गए। वे आगे बढ़ते हुए ऊपर के कमरे में चले गए। तभी फौजी दस्ता जो कि तुरंत प्रतिक्रिया दल था उसने लाईन को चारों ओर से घेर लिया और नीचे ऊपर आपस में फायरिंग होने लगी। तभी एक सूबेदार उनको काबू पाने के लिए ऊपर चढ़ने लगा तो एक उग्रवादी ने दरवाजे से झांका लेकिन उसको गोली लगी और वहीं ढेर हो गया परन्तु दूसरे ने उस सूबेदार को घायल कर दिया। बाद में सेना ने बम्ब से उस लाईन को उग्रवादी सहित उड़ा दिया।

सेना ने दोनों उग्रवादियों को मार गिराया लेकिन एक शर्मनाक घटना थी कि उग्रवादियों ने सेना के शिविर में घुसकर सैनिक मार गिराए। हालांकि स्थिति प्रतिकूल थी एक तो उन्होंने सेना की ही वर्दी पहनी थी और दूसरा वे मौत को गले लगाकर चले थे लेकिन कुछ भी हो आखिर इसमें सेना की हेठी थी।

इसका असर हमारे ऊपर भी पड़ा। सेना के उच्चाधिकारी हमारे पास बार-२ आने लगे और हमारी मिटिंग लेते। हर बार इस घटना को दोहराते और हमेशा अनेकों सवाल करते व अफसोस करते कि यह नहीं होना चाहिए था। उन्होंने हमारी गौरव गाथा और मान-मर्यादा की कसम देकर खून में उबाल पैदा किया और यह गलती भविष्य में रोकने के लिए सतर्कता बढ़ा दी। सेना ने चारों तरफ तारबंदी व मोर्चाबंदी की। ड्यूटियाँ बढ़ा दी गई। दिन-रात गस्त शुरू हो गई। जिस क्षेत्र में उग्रवादी छिपने की आशंका थी वहाँ पर तलाशी अभियान शुरू हुआ। एक-एक आदमी को शक की दृष्टि से देखा जाने लगा। आर्मी कैंट के अन्दर आना-जाना बड़ी ही निगरानी के अन्दर होने लगा। अनावश्यक जंगल साफ किया व एक-२ चप्पे-२ की तलाशी ली गई। आर्तकियों का अन्दर घुसना तो दूर उस तरफ देखना भी मुश्किल हो गया। लेकिन इस सबका क्या फायदा जो कलंक लगना था वह लग चुका था। इससे भविष्य की घटना पर जरूर रोक लगी।

आतंकवादी सेना के शिविर या उनके परिवारों पर हमला करके सेना का मनोबल नीचा करना चाहते हैं व अपना ऊँचा करना चाहते हैं। साथ ही इससे वे आम जनता में भी दहशत फैलाना चाहते हैं। लेकिन इससे सेना का मनोबल नीचा नहीं होता बल्कि वह घायल शेर की तरह उन पर बुरी तरह टूट पड़ती है और एक-२ को चुन-२ कर मारती है।

ऐसा ही---में कालूचक कैंट में हुआ। सेना कारगिल युद्ध होने की वजह से बोर्डर पर थी और उनके परिवार पीछे कैटॉनमेंट में फैमिली क्वाटरों में थे।---उग्रवादी सुबह-२ क्वाटरों में घुसे और सैनिकों के बीबी-बच्चोंको गाजर-मूली की तरह काट दिया। छोटे-२ बच्चों को बीच से चीर दिया। गर्भवती के बच्चे पेट में ही मार दिए। सुबह-२ ब्रह्ममुहूर्त के समय यह मौत का खेल खिलौनों की तरह खेला। इन घटनाओं के कारण जम्मू में यह हालात पैदा हुए और सर्तकता बढ़ी जिससे कई बार आम जनता को परेशानी उठानी पड़ती है। लेकिन चाहे कुछ भी हो आप सब के सहयोग से भारतीय सेना लोहा है और लोहा ही रहेगी।

श्रावणी विशेष

वेद ही है ईश्वरीय ज्ञान

❑**महात्मा चैतन्य मुनि जी**, ऊधमपुर

आज नहीं तो कल समूचे विश्व को वेद अपनाने से ही सुख और शान्ति प्राप्त हो सकेगी अतः हमें वेदाध्ययन को उच्च प्राथमिकता देकर अपने जीवन का अंग बनाने की आवश्यकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने संसार को एक अमर वाक्य दिया-'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।'' महर्षि जी ने वेद के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने को परम धर्म बतलाया है। जो श्रेष्ठ व्यक्ति है उनकी श्रेष्ठता का आधार वेद ही है क्योंकि वेद निर्भ्रान्त ईश्वरीय ज्ञान है:-

तिस्त्रो वाच ईरयति प्र वह्निर्ऋतस्य धीति ब्रह्मणो मनीषाम्।
गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं यान्ति मतयो वावशानाः।।
(ऋ० ९-९७-३४)

ईश्वर से प्राप्त ज्ञान का वाहक ऋषि तीन प्रकार की ऋक्, यजु और साम लक्षणयुक्त वाणियों को सत्य की धारणा और परमात्मा की सत्य प्रज्ञा को लोक में प्रचारित करता है। इसलिए वेद वाणियाँ वाणीपति परमात्मा से पूछती हुई सी बाहर जाती हैं अर्थात् ज्यों की त्यों प्रकाशित होती हैं तथा वेदवाही ऋषियों की बुद्धियाँ वेदप्रतिपादित पदार्थों की कामना करती हुई सोमादि पदार्थों को प्राप्त होती हैं।

वेद परमात्मा द्वारा दिया गया ज्ञान है इस सम्बन्ध में कुछ ग्रन्थों के प्रमाण देने उपयुक्त रहेंगे:-

स एष पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्।। **(योग० १-२६)**

अर्थात् वह परमात्मा प्राचीन अग्नि, वायु आदि ऋषियों का भी गुरु है। वेद के द्वारा सत्य अर्थों का उपदेश करने से परमेश्वर का नाम गुरु है।

शास्त्रयोनित्वात् (वेदान्त० १-१-३)

ऋग्वेदादि चारों वेद अनेक विद्याओं से युक्त हैं और सूर्य के समान सब सत्य अर्थों के प्रकाश करने वाले हैं। उनका बनाने वाला सर्वज्ञादि गुणों से युक्त परब्रह्म है।

एवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद् ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरस इत्यादि।। (शत० १४-०५)

महामना याज्ञवल्क्य जी अपनी पत्नी मैत्रेयी को कहते हैं कि हे मैत्रेयी, उस सर्वव्यापक ईश्वर से ही ऋक्, यजुः, साम और अथर्व ये चारों वेद उत्पन्न हुए हैं।

तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम्। (वैशे० १-३)

अर्थात् वेद ईश्वरोक्त हैं। इनमें सत्य विद्या और पक्षापात रहित धर्म का ही प्रतिपादन है।

तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत।। (यजु० ३१-७)
यस्माद् ऋचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन्।
सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखम्।।
स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः।। (अथर्व० १०/२३/४/२०)

अर्थात् उसी परब्रह्म से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद-ये चारों वेद उत्पन्न हुए।

यूँ तो अनेक मज़हब वाले भी अपने-अपने ग्रन्थ को परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान मानते हैं पर परमात्मा द्वारा प्रदत्त ज्ञान के भण्डार वेद में स्वयं ऐसी अन्य कितनी ही साक्षियाँ हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि वेद ही परमात्मा का दिया हुआ सत्य व निर्भ्रान्त ज्ञान है। वेद उन कसौटियों पर भी खरा उतरता है जिन्हें हम ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तक में होना अनिवार्य समझते हैं। इस प्रकार की कसौटियाँ अनेक हो सकती हैं, पर कुछ का विवेचन यहाँ पर प्रासंगिक रहेगा।

ईश्वरीय ज्ञान की प्रथम कसौटी यह है कि वह सृष्टि के आदि में दिया होना चाहिए। इस कसौटी पर केवल वेद ही ठीक उतरते हैं, क्योंकि अन्य जितने भी मत-मजहब आदि चले, उन्हें चले हुए अधिक समय नहीं हुआ है। किसी भी अन्य ग्रन्थ को लें उसमें एक दूसरे ग्रन्थ का उल्लेख किसी न किसी रूप में मिलता है, पर वेद में किसी अन्य ग्रन्थ का उल्लेख नहीं मिलता है।

परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान आदि सृष्टि में होना चाहिए और वह सृष्टि नियमों के अनुकूल ही होना चाहिए, प्रतिकूल नहीं। इस कसौटी पर भी केवल वेद ही खरे उतरते हैं, क्योंकि अन्य ग्रन्थों में हमें सृष्टि नियमों के विरुद्ध एक नहीं, बल्कि कितनी ही बातें देखने को मिलती हैं। कुरान, बाईबल तथा पुराण आदि में सैकड़ों सृष्टि नियमों के विरुद्ध बातें भरी पड़ी हैं। ईश्वरीय ज्ञान होने की एक कसौटी यह भी है कि उसमें किसी प्रकार का इतिहास या किसी व्यक्ति विशेष की स्तुति/निन्दा नहीं होनी चाहिए। इस दृष्टिकोण से भी केवल वेद ही खरा उतरता है, क्योंकि कुरान, बाईबल तथा पुराण आदि अनित्य इतिहास से भरे पड़े हैं। ईश्वरीय

ज्ञान का ग्रन्थ केवल वही हो सकता है जिसमें सार्वभौमिक शिक्षाओं का समावेश हो और वे शिक्षाएं सार्वकालिक और सार्वजनीन हों। इस कसौटी पर भी केवल वेद ही खरा उतरना है। ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तक की यह भी कसौटी होनी चाहिए कि उसमें व्यक्ति के अभ्युदय एवं निःश्रेयस् की सिद्धि की पूर्ण योजना होनी चाहिए तथा मानव के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष तक की सिद्धियों का मार्गदर्शन होना चाहिए। ईश्वरीय ग्रन्थ की एक कसौटी यह भी होनी चाहिए कि उसमें ईश्वर, जीव और प्रकृति का सही-सही और वैज्ञानिक विवरण हो। इन सभी कसौटियों पर केवल वेद ही शत प्रतिशत ठीक उतरता है; इसलिए वेद ही ईश्वरीय ज्ञान का पुस्तक है। महर्षि दयानन्द जी ने वेद को ज्ञान-विज्ञान का ग्रन्थ कहा है। वेद क्योंकि ईश्वरीय ज्ञान है इसलिए उसकी सत्यता सिद्ध करने के लिए किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।

महर्षि दयानन्द जी भी वेद को स्वतः प्रमाण मानते हैं। ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में वे लिखते हैं:- **ये स्वतः प्रमाणाभूता मन्त्रभागसंहिताख्याश्चत्वारो वेदा उक्ताः---**जो स्वतः प्रमाण मन्त्र संहिता नामक चार वेद कहे गए हैं। इसी प्रकार स्वमन्तव्यामन्त व्यप्रकाश तथा भ्रमोच्छेदन में उन्होंने वेद को स्वतः प्रमाण बतलाया है। स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में वे लिखते हैं- 'वे स्वयं प्रमाणरूप हैं कि जिनका प्रमाण होने में किसी अन्य ग्रन्थ की अपेक्षा नहीं। जैसे सूर्य वा प्रदीप अपने स्वरूप के स्वतः प्रकाशक और पृथिव्यादि के भी प्रकाशक होते हैं, वैसे चारों वेद हैं।' ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ग्रन्थ में वेद नित्यता के सन्दर्भ में उन्होंने कहा है- 'वेद के प्रामाण्य की सिद्धि के लिए अन्य प्रमाण का ग्रहण नहीं किया जाता, किन्तु अन्य शास्त्रों के प्रमाण को साक्षी के समान समझना चाहिए, क्योंकि वेद स्वतः प्रमाण हैं सूर्य के समान। जैसे सूर्य स्वयं प्रकाशित होता हुआ संसार के बड़े या छोटे पर्वत आदि से लेकर त्रसरेणु पर्यन्त पदार्थों को प्रकाशित करता है, वैसे ही वेद स्वयं प्रकाश होकर सब विद्याओं को प्रकाशित करता है।'

महर्षि दयानन्द जी से पूर्व वेदों के बारे में लोगों में अनेक प्रकार की भ्रान्तियां थी मगर महर्षि दयानन्द जी ने उन भ्रान्तियों का निराकरण करके वेद को ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध किया है। अर्वाचीन काल में महर्षि से पूर्व वेद जिनके भी हाथ लगा उन्होंने वेद के साथ अन्याय ही किया। यह ठीक है कि अनेक मनीषियों के तप से वेद ज्ञान हम तक पहुंचा है, पर महर्षि दयानन्द जी के प्रयासों से वेद व्यावहारिकता के स्तर तक उतर सका है। उन्होंने वेद के सम्बन्ध में प्रचलित तमाम भ्रान्तियों को नकारते हुए घोषणा की कि-'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।' महर्षि जी की इस घोषणा का आधार भी प्राचीन महापुरुषों द्वारा अनुमोदित है। महर्षि मनु जी का कथन है-'**धर्म जिज्ञास सानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः' (२-१३)** अर्थात् धर्म ज्ञान की इच्छा करने वालों के लिए वेद ही परम प्रमाण हैं। अन्य स्मृतियों में भी वेद की महत्ता को दर्शाया गया है:-

चत्वारो वा त्रयो वापि यं ब्रूयुर्वेदपारगाः।
स धर्म इति विज्ञेयो नेतरस्तु सहस्रशः।। (पराशर स्मृ० ८)

चार व तीन वेद के पूर्ण वेत्ता (ज्ञाता) मनुष्य जो बात कहें, वही धर्म जानना, अन्य हजारों लोग भी कहें तो भी वह धर्म नहीं होता।

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः।। (मनुस्मृति)

वेद को छोड़कर जो द्विज अन्य ग्रन्थों में परिश्रम करता है, वह जीवित ही कुटुम्ब सहित शूद्र जो जाता है।

अधीत्य सर्ववेदान् वै सद्यो दुःखान् प्रमुच्यते। (बृह० ७९)

अर्थात् वेदों पढ़ने वाला दुःखों से छूट जाता है।

नास्ति वेदात्परं शास्त्रम्। (अत्रि स्मृति ३-८)

अर्थात् वेद से बढ़कर शास्त्र नहीं है।

महाभारत का कथन है:-

अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।
आदौ वेदमयो दिव्या यतः सर्वा प्रवृत्तयः।। (शान्तिपर्व)
तपस्विनो धृतिमन्तः श्रुतिविज्ञानचक्षुषः।
सर्वमार्ष हि मन्यन्ते व्याहृतविदितात्मनः।। (शान्तिपर्व)

अर्थात् परमेश्वर ने सृष्टि के अनादि काल में वेद रूप नित्य वाणी का प्रकाश किया जिससे मनुष्य की सारी प्रवृत्तियाँ पैदा होती हैं। तपस्वी; धैर्यवान एवं ज्ञानसम्पन्न उसे परमात्मा की निश्वासभूत वाणी मानते हैं।

श्वेता० उपनिषद् (६-१८) में कहा गया है:-

यो वै ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं, यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै,
तं ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये।

यहां पर उस परमात्मा की सृष्टि के आदि में वेदों प्रकट करने वाला कहा गया है। इसके अतिरिक्त अन्य उपनिषदों में भी वेद की महत्ता का वर्णन मिलता है।

स्वामी शांकराचार्य जी अपने वेदान्त भाष्य (११-३) में लिखते हैं कि-'वेद नित्य हैं, सर्वज्ञकल्प हैं और समस्त विद्याओं के भण्डार हैं तथा प्रदीप के समान सारे अर्थों के प्रकाशक हैं। सर्वज्ञ गुणों से युक्त हैं।'

प्रसिद्ध विद्वान् कुल्लूक भट्ट का कथन है-'प्रलय काल में भी वेद परमात्मा के ज्ञान में सूक्ष्म रूप में स्थित रहते हैं।'

यह ठीक है कि वेदों की भारतीय मनीषियों ने

भूरि-भूरि प्रशंसा की है पर वेद का भाष्य करने वालों की भूल के कारण एक ऐसा भी समय आया जब वेदों पर अनेक प्रकार के आक्षेप लगने लगे। ऐसा होना स्वाभाविक भी था, क्योंकि भाष्यकारों ने जिस प्रकार पूर्वाग्रहों के कारण वेदों पर अपनी कुत्सित भावनाओं को थोंपा तो उनके वास्तविक अर्थ ही लुप्त हो गए। भारतीयों ने यज्ञ और अन्य कर्मकाण्डों के आधार पर; और पाश्चात्य भाष्यकारों ने कुछ तो भारतीय भाष्यकारों का अनुकरण करते हुए और कुछ ने आर्य संस्कृति को हीन दिखाने व विकासवादी विचारधारा का पिष्टपोषण करने के लिए ही भाष्य किए। इन भाष्यकारों के आधार पर ही मैक्समूलर जैसा व्यक्ति कहने लगा कि-'वेद में पर्याप्त मात्रा में बालपन और मूर्खतापूर्ण भाव हैं, यद्यपि उसमें ऐसे तत्त्व बहुत कम हैं जो बुरे और आपत्तिजनक हों-- कई मन्त्र तो सर्वथा अर्थरहित और निःसार हैं।' इस प्रकार के विद्वानों ने वेदों में निहित महान् दार्शनिकता को नहीं देखा था इसलिए उनके मन में वेद के प्रति इस प्रकार की भावना थी। प्रसिद्ध विद्वान पं॰ ब्रह्मदत्त जी ने एक स्थान पर लिखा है कि-'यदि सायण भाष्य का ही हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू व अन्य किसी भाषा में अनुवाद करके किन्हीं शिक्षणालयों में रख दिया जाए तो निश्चय ही समझना चाहिए कि कुछ श्रद्धालुओं को छोड़कर सबकी एक ही ध्वनि उठेगी कि वेद जंगलियों की यूँ ही बड़बड़ाहट या अपट-सपट कृतियां है।'

वेद के प्रति इस प्रकार की गलत धाराणाओं को निर्मूल करने का श्रेय निश्चित रूप से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को जाता है। उन्होंने पुरातन ऋषि-मुनियों की परम्परा को ध्यान में रखते हुए निरुक्त के आधार पर वेद-भाष्य का मार्ग प्रशस्त किया। निरुक्त (अ॰ ६, अ॰ ७, खण्ड १,२) के अनुसार ऋचाओं को तीन भागों में बांटा जा सकता है। **परोक्षदेवता की स्तुति करना, प्रत्यक्ष देवता की स्तुति करना तथा अध्यात्म देवता की स्तुति करना।** इसलिए इनके अर्थ-परोक्षपरक, प्रत्यक्षपरक और आध्यात्मपरक हो सकते हैं। महर्षि दयानन्द जी ने निरुक्त के इन तीनों भागों का थोड़ा और सरलीकरण करके व्यावहारिक और पारमार्थिक में बांटा है। ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के प्रतिज्ञा विषय में वे स्पष्ट करते हैं- इस भाष्य में पद-पद का अर्थ पृथक्-पृथक् क्रम से लिखा जाएगा कि जिससे नवीन टीकाकारों के लेख से जो वेदों में अनेक दोषों की कल्पना की गई है, उन सबकी निवृत्ति होकर उनके सत्य अर्थों का प्रकाश हो जाएगा तथा जो-जो सायण, माधव, महीधर और अंग्रेजी व अन्य भाषा में उथले भाष्य किए जाते व किए गए हैं, तथा जो-जो देशान्तर भाषाओं में टीका हैं, उन अनर्थ व्याख्यानों का निवारण होकर मनुष्यों को वेदों के सत्य अर्थों को देखने से अत्यन्त सुख लाभ पहुँचेगा।'

महर्षि की यह भावना कार्यरूप भी हुई। उनके भाष्य के बाद सभी लोगों का वेदों के प्रति दृष्टिकोण बदल गया। मैक्समूलर जैसा व्यक्ति भी बाद में यह कहने पर विवश हुआ कि-**'हम तो वैदिक साहित्य की सामुद्रिक सतह पर ही फिरते हैं। अभी हमने उस समुद्र में गोता लगाकर रत्न नहीं निकाला। हमने तीस वर्ष के परिश्रम के बाद वेद का जो अनुवाद किया वह आज प्रमाणित नहीं है। शुद्ध और सम्पूर्ण अनुवाद के लिए एक शताब्दि और चाहिए। इस पर भी मुझे यह शंका है कि हम वेद का सत्य अनुवाद कर भी सकेंगे?'** यही नहीं ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के अध्ययन के बाद मैक्समूलर कहता है- 'मेरा यह निश्चित मत है कि संसार में मनुष्य मात्र के स्वाध्याय के लिए वेद के अतिरिक्त अन्य कोई आवश्यक ग्रन्थ नहीं है।' तथा 'मेरा विचार है कि आत्मज्ञान की प्राप्ति की इच्छा रखने वाले तथा अपने पूर्वजों, इतिहास और मस्तिष्क की उन्नति के लिए सचेत प्रत्येक व्यक्ति के लिए वेद का स्वाध्याय नितान्त आवश्यक है। महर्षि दयानन्द जी के भाष्य के बारे में यही मैक्समूलर लिखता है- 'स्वामी दयानन्द के लिए वेद में लिखी प्रत्येक बात न केवल पूर्णतया सत्य है, अपितु वह इससे भी एक पग आगे गए तथा वे वेद की व्याख्या से दूसरों को यह निश्चय कराने में सफल हुए हैं कि प्रत्येक जानने योग्य बात वेद में पाई जाती है अतः आधुनिक विज्ञान के आविष्कार भी वेद में वर्णित हैं।'

महर्षि दयानन्द जी के भाष्य के बाद वेदों के प्रति सभी की दृष्टि साफ हो गई तथा अनेक भारतीय और पाश्चात्य लोगों ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। पिट्स ने कहा-'पाश्चात्य विद्वानों का संस्कृत और वेदों का ज्ञान नहीं के बराबर है। हमें उनके कथन पर बिल्कुल विश्वास नहीं। हम केवल दयानन्द के भाष्य को ही प्रमाणित समझते हैं।'

महात्मा टी॰ एल॰ वासवानी के विचारानुसार-'स्वामी दयानन्द सरस्वती वेदों के ज्ञान के प्रति भारतीयों का ज्ञान चक्षु खोलने वाला पहला व्यक्ति था। मुझे आधुनिक भारत में स्वामी दयानन्द के समान कोई भी विद्वान ज्ञात नहीं।'

फ्रांस के प्रसिद्ध विद्वान लूई रेन का कथन है- 'सनातन हिन्दू धर्म का एक स्पष्ट मान्यता सूत्र वेदों के प्रति एकान्त विश्वास है, इसलिए हमें दयानन्द को वेदों के प्रति परम्परागत आदर भाव देख कर कोई आश्चर्य नहीं होता किन्तु सनातन हिन्दू धर्म में वेदों के प्रति इस प्रकार की आस्था दिखाना तो बहुत कुछ वैसा ही है जैसा कोई श्रद्धालु किसी रास्ते पर या चौराहे पर किसी मूर्ति के आगे सिर झुका

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

प्रभो! मुझे वाणी की मधुरता प्रदान कीजिये!

❑श्री अशोक कौशिक (पूर्व सम्पादक शाश्वत वाणी एवं आर्यजगत्)

मृदु वाणी और कटु एवं व्यंग्यात्मक वाणी के प्रभाव एवं दुष्प्रभाव के महाभारत के प्रसंग मनुष्य की आंखें खोलते हुए इस लक्ष्य की ओर संकेत करते हैं कि मृदु वाणी ही सफल एवं स्वच्छ जीवन का सार है।

ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय।।

ऋग्वेद के दूसरे मण्डल के इक्कीसवें सूक्त के छठे मंत्र में जहां अपने उल्लासमय जीवन के लिऐ अनेक प्रार्थनायें की गई हैं वहीं 'वाचः स्पाद्मानं धेहि' अर्थात् 'प्रभो ! मुझे वाणी की मधुरता प्रदान कीजिये' भी कहा गया है। मनुष्य-जीवन में वाणी का बड़ा महत्व है। वाणी को मनुष्य का सबसे बड़ा आभूषण कहा गया है। नीति-शतक के एक श्लोक का सारांश है-मनुष्य को उसकी सुसंस्कृत वाणी ही अलंकृत करती है, अन्य आभूषण तो क्षीयमाण हैं। वाणी रूपी आभूषण ही वास्तव में आभूषण है। रहीम ने भी कहा है 'कहिं रहीम कटु वचन तें दुःख उपजत चहुं ओर।'

महाभारत के अनेक कारणों में से एक कारण वाणी का दुरुपयोग भी है। दुर्योधन प्रकृत्या महत्त्वाकांक्षी और ईर्ष्यालु तो था ही, किन्तु बिना सोचे-समझे द्रोपदी, अर्जुन, कृष्ण, नकुल, सहदेव और भीम के वचन तथा उपहासपूर्ण व्यवहार ने उसकी ईर्ष्याग्नि में घृत का कार्य किया था। युधिष्ठिर के अश्वमेध यज्ञ के समय उसको भण्डार-गृह का अधिपति बनाया गया था। विभिन्न देशों के राजाओं द्वारा दी जाने वाली भेंट संभालने का कार्य उसे सौंपा गया। उस समय इतनी अपार सम्पत्ति, धन-दौलत, आभूषण आदि एकत्र हो गये कि दुर्योधन की आंखें चुंधिया गईं। वह ईर्ष्या से दहकने लगा। उसका मानसिक संतुलन बिगड़ने लगा।

उसकी ऐसी दशा देख कर शकुनि ने धृतराष्ट्र से इसका वर्णन किया तो धृतराष्ट्र ने दुर्योधन को बुला कर कहा -'पुत्र! तुम्हारे पास भी किसी वस्तु की कमी तो नहीं, तुम्हारे लिये भी पाण्डवों जैसा सभागार बनवाया जा सकता है। अतः तुम पाण्डवों की समृद्धि को देखकर अपना मन छोटा मत करो। यह सुनकर वह अपनी व्यथा का बखान करते हुए बोला- 'तात! युधिष्ठिर के सभा-भवन को विन्दुसर के रत्नों से, जिसके ऊपर स्फटिक मणि भी लगी हुई थी ऐसा रचा गया है कि उसका फर्श मुझे कमलों से सजी पानी से लबालब भरी वापी प्रतीत हुई। मैंने उसे पानी से भरी बावड़ी समझ कर उधर से जाते हुए अपने कपड़े ऊपर को उठाये तो भीम खिलखिला कर हंस पड़ा। उसके हंसने का भाव यह भी था कि उसके पास अपार ऐश्वर्य है और मैं निरैश्वर्य हूं। मन में आया कि उसका वहीं पर गला घोंट दूं किन्तु तभी समझ में आ गया कि यदि मैंने ऐसा किया तो मेरी भी वही गति होगी जो गति कृष्ण ने शिशुपाल की की थी।

शत्रु द्वारा किया गया इस प्रकार का उपहास मुझे जलाये डाल रहा है। मैंने आगे चलकर फिर देखा कि वैसी ही कमलों से सजी एक अन्य बावड़ी है, मैंने पहले के समान उसे भी रत्नकमल जड़ित पत्थर ही समझा और मैं आगे बढ़ा तो पानी में गिर पड़ा। यह देखकर कृष्ण और अर्जुन ठहाका मारकर हंसे तो द्रौपदी भी अपनी सखियों के साथ खिलखिला पड़ी। इस उपहास से मुझे मर्मान्तक वेदना हुई। पाण्डवों के सेवकों ने मेरे लिये अन्य वस्त्रों की व्यवस्था कर दी। हे राजन्! और भी जो धोखा हुआ वह भी सुनिये। एक दीवार पर द्वार सा प्रतीत होता था, जब मैं उससे निकलने लगा तो मेरा मस्तक दीवार से टकरा कर चोटिल हो गया। नकुल और सहदेव ने यह देखकर मुझे अपनी बाहों में थामते हुए खेद व्यक्त किया और बोले राजन! द्वार यह है वह नहीं। उसी समय उच्च स्वर में हंसते हुए भीम ने कहा, धृतराष्ट्रपुत्र! द्वार यह है, वह नहीं। धृतराष्ट्र पुत्र कहकर प्रकारान्तर से उसने मुझे अन्धा कह दिया।

इस सारे प्रकरण से स्पष्ट है कि पाण्डवों का गर्व मिश्रित यह उपहास और उसे धृतराष्ट्र पुत्र कहकर पुकारना, जिससे दुर्योधन को अंधा कहना ध्वनित होता है, साधारण बात नहीं अपितु व्यावहारिक दृष्टि से यह बहुत बड़ी भूल थी। कटु और व्यंग्यात्मक वाणी और मधुर वाणी में यही अन्तर है। नम्रवाणी तो जादू का सा प्रभाव डालती है। इसीलिये हमने ऊपर लिखा है कि महाभारत युद्ध का एक कारण वह कटुवाणी भी थी जिसने दुर्योधन को विचलित कर दिया और उसने युधिष्ठिर की उस सम्पत्ति को हड़पने के उपाय में पाण्डवों को वनवास तक दिला दिया।

इसके विपरीत महाभारत का ही वह प्रसंग भी है जब महाभारत आरम्भ ही होने वाला था और समुद्र के समान विशाल सेनायें युद्ध भूमि पर खड़ी थीं तब युधिष्ठिर

अपने शस्त्रास्त्र अपने रथ पर रख कर हाथ जोड़ता हुआ शत्रु सेना की ओर बढ़ चला। उसे इस प्रकार जाता देखकर अर्जुन भी उसके पीछे-पीछे चलने लगा तो कृष्ण सहित सभी पाण्डव भी चलने लगे। पर कहाँ और क्यों जा रहे हैं, यह किसी को ज्ञात नहीं था। उनकी यह दशा देखकर कृष्ण ने कहा- 'भैया युधिष्ठिर सर्वप्रथम भीष्म, द्रोण, कूप और शल्य की अनुमति लेकर शत्रु से युद्ध करेंगे।'

उधर युधिष्ठिर को कौरव सेना की ओर आता देखकर कौरवों के सैनिक यह अनुमान करने लगे कि हमारी सेना की विशालता को देखकर युधिष्ठिर भयभीत हो गए हैं और युद्ध टालना चाहते हैं। इधर युधिष्ठिर ने शस्त्राशस्त्र से सज्जित भीष्म के सम्मुख जाकर उनके चरण पकड़ कर कहा- 'तात! आपसे आपके विरुद्ध युद्ध करने की अनुमति लेने के लिए हम लोग आपकी सेवा में उपस्थित हुए हैं। कृपया आज्ञा और आशीर्वाद देकर हमें अनुग्रहीत कीजिये।' भीष्म युधिष्ठिर के श्रद्धापूर्ण तथा स्नेहिल वचनों को सुनकर गद् गद् हो गये और बोले- 'पुत्र! मैं प्रसन्न हुआ, तुम युद्ध करो और विजय प्राप्त करो।' इसी प्रकार युधिष्ठिर, द्रोण और शल्य के पास गये और उन सब पर भी उसकी वाणी का वही प्रभाव हुआ जो भीष्म पर हुआ था। उन्होंने भी आशीर्वाद देकर उसके विजय की कामना की। उसके बाद युधिष्ठिर कौरव सेना की ओर उन्मुख होकर बोले -जो योद्धा हमें न्याय के मार्ग पर समझ कर हमारी सेना में आना चाहते हों हम उन्हें गले लगाने को उद्यत हैं। यह सुनकर दुर्योधन का सहोदर भाई 'युयुत्सु' बोला- 'यदि आप मुझे अपना सकें तो मैं आपकी ओर से कौरवों से लड़ने को उद्यत हूँ।' युधिष्ठिर ने उसे गले लगाया और कहा- प्रतीत होता है कि युद्धोपरान्त धृतराष्ट्र के नामलेवा तुम ही रहोगे।

यह बात दूसरी है कि यदि भीष्म आदि इस परिस्थिति के उपस्थित होने से पूर्व ही दुर्योधन और उसके सहयोगियों को कुमार्ग से हटाने का यत्न करते तो कदाचित् महाभारत युद्ध न होता और १८ अक्षौहिणी सेना नष्ट न होती और न ही उतनी महिलायें विधवा तथा उनके बाल-बच्चे अनाथ होते एवं युद्धोपरांत कुछ काल के पश्चात् जो दुराचार और अनाचार देश में फैला वह न फैलता।

इसी प्रसंग में दुर्योधन की कुटिल मृदुभाषिता का भी एक उदाहरण देखें। लोलुप और चाटुकारिताप्रिय मद्रनरेश शल्य; जो नकुल और सहदेव का मामा था- दुर्योधन की नम्रता और सद्व्यवहार पर मुग्ध होकर उसकी ओर से युद्ध करने के लिए उद्यत हो गया था। पाण्डवों का सगा मामा विरोधी पक्ष में हो जाय यह मीठी वाणी और सद् व्यवहार का ही तो चमत्कार था। मृदु वाणी और कटु वाणी के प्रभाव एवं दुष्प्रभाव के महाभारत युद्ध के ये प्रसंग मनुष्य की आंखें खोलते हुए इस लक्ष्य की ओर संकेत करते हैं कि मृदु वाणी ही सफल एवं स्वच्छ जीवन का सार है।

महाभारत के ही एक अन्य प्रसंग में महात्मा विदुर ने वाणी के विषय में एक सुन्दर उदाहरण देते हुए कहा है- वाणों से वींधा हुआ घाव भर जाता है, कुल्हाड़ी से काटा गया वृक्ष अथवा वन पुनः हराभरा हो जाता है, किन्तु कटुवाणी द्वारा बींधा गया व्यक्ति का घाव कभी नहीं भरता।

कागा किससे लेत है, कोयल किसको देत।
मीठी बोल के, जग अपनी करि लेत।

सीताराम गुप्ता के दोहे

मत दर्पण के पास जा मत तू रूप निहार,
मन-दर्पण में झाँककर, पहले उसे सँवार।।

जीवन में जिसने नहीं, झेले झंझावात,
सह पाता है वो यहाँ नहीं तनिक आघात।।

चापलूस इंसान का, नहीं दीन ईमान,
सुबह किसी की आरती शाम किसी का ध्यान।

जब जीवन की नाव पर, लादें ज्यादा भार,
रहती डावाँडोल वो डूबेगी मँझधार।।

ऊँचाई पर पहुँचना नहीं कठिन तू जान,
लदा हुआ जो पीठ पर कम कर दे सामान।।

मन में पूर्वाग्रह न हो चिंतन रहे यथार्थ,
कर्म सदा निष्काम हो, सेवा हो निःस्वार्थ।।

सींचा है हमने इसे प्राणों से रख याद,
जाति धर्म के नाम पर देश न कर बरबाद।।

जो भी करना आज कर, कल पर मत तू टाल,
कल कल करके बीतते यहाँ साल दर साल।।

नहीं स्वयं का हो कभी न्यून आत्मविश्वास,
जीवन के इम्तिहान में होना है यदि पास।

रहिए दौलतहीन ही बेशक नाम अनाम,
कठपुतली मत और की बनना सीताराम।।

ए डी-१०६-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034 (09555622323)

जीवन दर्शन

जीवन को उत्तम बनाने के चार उपाय-४

बृहदारण्यक उपनिषद् पंचम अध्याय, १३वें ब्राह्मण के आधार पर

❒दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

प्रथम एवं द्वितीय उपाय=उक्थ, 'यजुः' व 'साम' के पश्चात् चतुर्थ उपाय के विषय में पढ़िये-

चौथा साधन क्षत्र

प्रजापति ऋषि ने जीवन दर्शन का चौथा उपाय इस प्रकार बताया-

क्षत्रं प्राणे हि वै क्षत्रं प्राणो हि क्षत्रं त्रायते हैनं प्राणाः क्षणितोः प्रक्षत्रमत्रमाप्नोति क्षत्रस्य सायुज्यं सलोकतां जयति य एवं वेद।।

प्राण ही 'क्षत्र' है और 'क्षत्र' ही प्राण है। यह प्राण शरीर को क्षणित=क्षीण होने से बचाता है। प्राण के इस रहस्य को जो जानता है वह उस 'क्षत्र'=बल को प्राप्त करता है। जो अ+त्र है, अर्थात् किसी दूसरे से त्राण नहीं चाहता, वह इस क्षत्र=बल की समीपता और समानता को प्राप्त करता है।

क्षत्र का अभिप्राय है- क्षतात् दुःखात् त्रायते इति क्षत्रम्।। दुःख से बचाने का नाम 'क्षत्र' है और जो यह कार्य करे, उसे ही 'क्षत्रिय' कहा जाता है। क्षत्रिय का काम केवल शासन करना नहीं है, किंतु प्रजा का पालन और रंजन भी है। प्रजानां रंजनात् राजेत्याहुः।। प्रजाओं को प्रसन्न रखने वाले को ही राजा कहा जाता था। मनुस्मृति में क्षत्रिय के कर्तव्य इस प्रकार बताए गए हैं-

प्रजानां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।
विष्येष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समासतः।। १/८६

न्यायपूर्वक प्रजा की रक्षा और उसे प्रसन्न रखना, विद्या-धर्म आदि उत्तम कर्मों में धन का व्यय करना, अग्निहोत्र आदि यज्ञ करना, वेदादि शास्त्रों का पढ़ना, विषयों में न फंसकर जितेन्द्रिय रहना= ये कर्तव्य संक्षेप में क्षत्रिय के हैं।

जिस समय श्रीरामचंद्र १४ वर्ष के वनवास में थे, उस समय राजधानी और नगरों से दूर रहने वाली प्रजा के साथ भी उनका निकट संपर्क हुआ। राक्षसों द्वारा प्रजा पर किए गए अत्याचारों और उत्पीड़न के समाचार सुनकर वे बहुत दुःखी हुए। एक जगह मानव अस्थियों के ऊँचे ढेर को देखकर वे आश्चर्यचकित हो गये। पूछने पर उन्हें बताया गया कि ये अस्थिपंजर उन मनुष्यों के हैं, जिन्हें राक्षसों ने मार कर फेंक दिया था। इस दृश्य से श्रीराम का हृदय अत्यंत द्रवित हो गया। उन्होंने तत्काल घोषणा की-

नत्वहं कामये राज्यं न सौख्यं न पुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्।।

मैं राज्य की कामना नहीं करता। मैं सुख और मोक्ष प्राप्त करना नहीं चाहता। मैं तो केवल यही चाहता हूं कि दुःखग्रस्त प्राणियों के दुःख का अंत कर सकूँ।

तीन प्रकार के दुःख

मनुष्य जीवन का लक्ष्य दुःखों से छूटना ही है। इसी के लिए हमारे सारे प्रयत्न होते हैं। ये दुःख तीन प्रकार के हैं- अविद्या, अन्याय और अभाव के। अविद्या-अज्ञान के कारण बहुत दुःख पैदा होते हैं। किसी नियम व कानून को न जानना उसके परिणाम से बचने में कभी भी सहायक नहीं हो सकता। अज्ञानता में किए हुए पापों का भी फल तो भोगना ही पड़ता है। यदि अज्ञान से आग में हाथ डाल दिया जाए तो आग तो जलाने में कोई संकोच नहीं करेगी। अतः संसार से दुःख की मात्रा कम करने के लिए अज्ञान का नाश और ज्ञान का प्रचार करने में सदा तत्पर रहना चाहिए। यह काम जिनके जिम्मे था, उन्हें ब्राह्मण कहा जाता था।

दूसरा दुःख अन्याय का है। बलवान निर्बलों पर अन्याय और अत्याचार करते हैं। व्यक्तिगत रूप से इस अन्याय का रूप शोषण, दोहन और उत्पीड़न है। सामूहिक रूप से बलवान राष्ट्र निर्बल राष्ट्रों पर, संगठित और बलशाली जातियाँ कमजोर और निहत्थी जातियों पर अत्याचार करती हैं। पिछली कई सदियों का विश्व का इतिहास- पश्चिमी देशों द्वारा पूर्वी देशों पर किए गए अनेक प्रकार के रोमांचकारी अत्याचारों और अन्यायों से भरा हुआ है। बीसवीं सदी के दो संहारक विश्व युद्ध इसी के प्रमाण हैं। ऐसे अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाना, आंदोलन करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। श्रीकृष्ण ने कंस के अत्याचारों और अन्याय के विरुद्ध खड़े होकर उसका विनाश कर इसका एक अनुकरणीय उदाहरण उपस्थित किया है। इस दुःख का निवारण करना क्षत्रियों का विशेष कर्तव्य है।

तीसरा दुःख अभाव है। बुभुक्षा, नग्नता, निराश्रयता, व्याधि और रोग से मानवता कराह रही है। पग-पग पर हमें- कहीं खाद्यान्न का अभाव, कहीं कपड़े का अभाव, कहीं सिर छुपाने के लिए छत का अभाव और कहीं रोगग्रस्तों के लिए औषधि का अभाव दिखाई देता है। इनके निराकरण के लिए मनुष्य को अपने समय का, शक्ति और धन का प्रयोग करना चाहिए। अपने धन से वैश्य और सेवा की भावना से शूद्र को इस तीसरे प्रकार के दुःख को दूर करने के लिए सतत प्रयत्नशील होना चाहिए।

प्रजापति ऋषि ने कहा- शिष्यो! इस 'क्षत्र' का एक अन्य अभिप्राय भी है। 'क्षत'=घाव=आक्रमण से 'त्र'=रक्षा करना, अर्थात् आत्मरक्षा करना। नीतिकारों ने कहा है- आत्मानं सततम् रक्षेत्। अपने आप की सदा रक्षा करे।

आत्मरक्षा की भावना सर्वदा स्वाभाविक है। छोटे से छोटा प्राणी भी अपने को संकट, दुःख व मौत से बचाना चाहता है, बाहर से आक्रमण होने पर अपनी रक्षा करता है। मनुष्य भी स्वभावतः आत्मरक्षा करता है। बाल्मीकि रामायण में तो यहां तक कहा गया है कि

गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यमजानतः।
उत्पथ प्रतिपन्नस्य कार्यं भवति शासनम्,
अमित्रभूतो निःसंगः बध्यतां बध्यतो अपि।। अ० २१/१३

कर्तव्य-अकर्तव्य को भूला हुआ और पथभ्रष्ट गुरु भी यदि आक्रमण करे तब उसका नियंत्रण करके वध कर देना चाहिए। नीति की दृष्टि से भी आक्रमण होने पर आत्मरक्षा के लिए पूज्य से पूज्य व्यक्ति के हनन में दोष नहीं माना गया है। 'सेल्फ डिफेंस' अपने को बचाने के लिए आक्रमणकारी को मार देना आज के कानून में भी जायज माना गया है।

प्रकृति ने प्रत्येक प्राणी को आत्मरक्षा के साधन दिए हैं। रेंगने वाले सांप इत्यादि जीवों को विषैले दाँत या विष की थैलियां, पशुओं को तीखे नाखून, पंजे, दाँत, सींग इत्यादि; और चींटी, कीड़े, मकोड़े, मच्छर आदि को भी छोटे-छोटे दांत आदि काटने के साधन प्रकृति ने दिए हैं। सर्दी में जब तालाब, नदी और समुद्र का पानी जम जाता है तब मछली तथा अन्य जलीय जीवों की रक्षा के साधन प्रकृति स्वयं उपस्थित कर देती है। मनुष्य के शरीर में भी आत्मरक्षा के साधन हैं। वातावरण में कभी अधिक सर्दी और कभी अधिक गर्मी होती है पर स्वस्थ मानव के शरीर का तापमान ९८° तक ही रहना चाहिए।

रक्षा का केंद्र-बिंदु आत्मा

शास्त्रों में आत्मरक्षा के कई क्रम बताए गए हैं जैसे- त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्।

मानव जन्म की सफलता इसी में है कि वह जीवन यात्रा के तरीकों को ठीक प्रकार समझे। शरीर को आत्मा के अधीन करे, न कि आत्मा शरीर का गुलाम हो जाए। शरीर की रक्षा भी आवश्यक है क्योंकि आत्मा का निवास इसी में है, पर इस सत्य को कभी न भूलो कि शरीर केवल साधन है, साध्य नहीं है।

ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्।।

कुल की रक्षा के लिए एक व्यक्ति को छोड़ दे, ग्राम की रक्षा के लिए कुल का त्याग कर दे। जनपद की रक्षा के लिए ग्राम का त्याग कर दे और आत्मा की रक्षा के लिए समूची पृथ्वी का त्याग कर दे। इस प्रकार आत्मा को सबसे अधिक मूल्यवान समझे। मानव सभ्यता का केंद्र-बिंदु यह 'आत्मा' ही है। इसकी परिधि में ही सब कुछ आ जाता है। इस के ज्ञान को ही जीवन का परम लक्ष्य माना गया है। बृहदारण्यक उपनिषद् में याज्ञवल्क्य मुनि के ये शब्द कितने गंभीर और सत्य हैं-

आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः। मैत्रेय्यात्मनि खल्वरे दृष्टे श्रुते मतेऽविज्ञातं इदं सर्वं विदित भवति।।

आत्मा को ही देखना, सुनना, मानना और ध्यान करना चाहिए। आत्मा को देखने, सुनने, मानने और जानने से ही सब कुछ जाना जाता है। इस आत्मा के द्वारा ही परमात्मा के दर्शन हो सकते हैं। परमात्मा की उपेक्षा करके आत्मज्ञान संभव नहीं है। श्वेता० उपनिषद् के शब्दों में-

यदा चर्मवदाकाशं वेष्ठयिष्यन्ति मानवाः।
तदा देवमविज्ञाय दुःखस्यान्तं भविष्यति।।

इस आकाश को चमड़े के समान लपेटने में जब मनुष्य समर्थ होगा, तभी परमात्मा को जाने बिना दुःख का अंत संभव होगा। जैसे आकाश को लपेटना असंभव है इसी प्रकार ब्रह्मा की उपेक्षा करना असंभव है।

प्रजापति ऋषि ने कहा- 'आत्मरक्षा' संसार में रहने का चौथा उपाय है, पर इसका अभिप्राय केवल शरीर रक्षा से नहीं किंतु शरीर के स्वामी आत्म देव वा 'आत्म तत्त्व' की रक्षा से भी है। इतना ही नहीं, इस आत्मा की रक्षा में अर्थात् आत्मा को ऊँचा, पवित्र, शुद्ध और मोक्षावलम्बी बनाने में यदि इस स्थूल शरीर का त्याग भी करना पड़े तो उसमें संकोच नहीं करना चाहिए। यह दृढ़ विश्वास रखना चाहिए

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

स्वस्थ आहार के स्वर्णिम सूत्र

आयुर्वेद शिरोमणि **डॉ० मनोहरदास अग्रावत** एन०डी० 'विद्यावाचस्पति' (प्राकृतिक चिकित्सक)

स्वाद, नाम या मूल्य के आधार पर नहीं, खाद्य पदार्थों की वरीयता उनके सुपाच्य और ताजे होने पर दी जानी चाहिये। सड़े अंगूरों की तुलना में ताजे टमाटर हजार गुने अच्छे हैं।

(१) बिना कड़ी भूख भोजन न करें। भोजन उतना ही करें कि पेट को बोझ महसूस न हो। कहावत भी है–'आधा भोजन, दुगुना पानी, तिगुना श्रम, चौगुनी मुस्कान।'

(२) भोजन करते समय चित्त में प्रसन्नता हो। खाते समय बातें बिल्कुल न करें। चिंता, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, भय आदि मानसिक उद्वेग के समय भोजन न करें तो अच्छा है क्योंकि उस समय किया गया भोजन ठीक से नहीं पचेगा और रोग पैदा करेगा। भोजन को प्रभु का प्रसाद व प्रत्येक ग्रास को अमृततुल्य स्वास्थ्यवर्द्धक मानकर ग्रहण करें।

(३) अनाज को चक्की में अधिक महीन पीसने से तथा तलने, भूनने से स्वाभाविक गुण आवश्यक खनिज लवण, विटामिन्स नष्ट हो जाते हैं। अतः स्मरण रहे कि मोटे आटे (चोकरयुक्त) की रोटी ही खाएं। भोजन को भाप में पकाकर कम मसालों का प्रयोग करें। घी, तेल पचने में भारी होते हैं अतः दूध, दही, अंकुरित अनाज आदि से इनकी पूर्ति कर लेनी चाहिए। अंकुरित अनाज–चना, मूंग, मूंगफली, गेहूं तथा नारियल आदि में पर्याप्त पोषक तत्व हैं। अंकुरित अन्न में पोषण शक्ति कई गुना बढ़ जाती है। नित्य प्रातः पचास ग्राम अंकुरित अन्न खूब चबा–चबाकर सेवन करना चाहिए।

(४) सप्ताह में एक दिन पेट को छुट्टी देने के लिए उपवास की आदत डालनी चाहिए। जब सभी कर्मचारियों को नई स्फूर्ति अर्जित करने के लिए साप्ताहिक अवकाश मिलता है, तो पेट को छुट्टी क्यों न मिले? वास्तविक उपवास वह है, जिसमें जल की कुछ मात्रा बढ़ाकर उसमें नींबू डालकर पिया जाता है। यह न बन पड़े तो दूध, छाछ (मट्ठा) फलों का रस लेकर काम चलाना चाहिये। पूरे दिन जिन्हें भूखे रहना कठिन हो तो एक समय शाम को तो उपवास कर ही लें। उपवास से पाचन शक्ति बढ़ती है तथा शरीर शोधन में बड़ा सहयोग मिलता है।

(५) खाद्य पदार्थों को सीलन, सड़ने वाले स्थानों एवं बदबू वाले पात्रों में नहीं रखना चाहिए। चूहे, घुन आदि कीड़े उन्हें जहरीला न बनाएं इसलिए सभी खाद्य पदार्थ ढककर रखने चाहिए। समय–समय पर धूप में सुखाते रहना चाहिए। पकाने एवं खाने के उपकरण साफ सुथरे रखने चाहिएँ जिससे उनमें विषाक्तता उत्पन्न न हो।

(६) सभी प्रकार के नशे हानिकारक हैं। उनमें से किसी का भी व्यसन नहीं अपनाना चाहिये। क्षणिक उत्तेजना के लिए शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य चौपट करने, अकाल मृत्यु तथा सर्वत्र निंदित होने एवं परिवार को अस्त–व्यस्त करने वाली इस बुराई से हर किसी को बचना चाहिये, जिन्हें यह लत लगी हो उन्हें इसे छुड़ाने का प्रयत्न करना चाहिये।

(७) सड़े गले शाक, सब्जी, फल, मिठाई आदि को खाते रहना बुरी बात है। स्वाद, नाम या मूल्य के आधार पर नहीं, खाद्य पदार्थों की वरीयता उनके सुपाच्य और ताजे होने पर दी जानी चाहिये। सड़े अंगूरों की तुलना में ताजे टमाटर हजार गुने अच्छे हैं। आवश्यक नहीं कि कीमती मेवा, फल या टॉनिकों पर धन पानी की तरह बहाया जाए और पहलवान बनने का सपना देखा जाए। जिनके पास उतना धन नहीं है वे अंकुरित अन्न से भी बादाम जैसा पोषण पा सकते हैं। गाजर में उच्च कोटि का विटामिन 'ए' है। गाजर का रस नित्य पीने से रक्त की शुद्धि होती है। गाजर का रस स्वयं ही एक टॉनिक है। आंवला, नींबू, केला, अमरूद, सेव, संतरा, मौसमी जैसे मौसमी फल टॉनिकों से बढ़कर हैं।

(७) भोजन करते समय ठीक से चबाना चाहिए। इस सम्बन्ध में ध्यान देने योग्य विषय हैं–

(क) चबा चबाकर भोजन करने से कम खाकर भी अधिक तृप्ति मिलती है। मोटापा नियंत्रित करने के लिए चबा चबाकर धीरे–धीरे भोजन करना चाहिए। चबाने से खून में सेरीटोनिन नामक हार्मोन की मात्रा बढ़ जाती है जिससे अनिंद्रा, तनाव, मानसिक अवसाद, सिरदर्द आदि रोग दूर हो जाते हैं।

(ख) भोजन को ठीक तरह चबाने से आंतों की क्रिया ठीक रहने से उपापचन ठीक होता है। फलःस्वरूप डायबिटीज (शुगर) संधिवात, गठिया इत्यादि रोग ठीक होते हैं।

(ग) चबा चबाकर खाने से हाइपर एसिडिटी (अति अम्लता) तथा भूख न रखने की शिकायत दूर हो जाती है।

(८) भोजन के साथ पानी पीने की आदत ठीक नहीं है।

भोजन करने के एक घंटे पूर्व से पानी न पिएं तथा भोजन करने के डेढ़ घंटे बाद पानी खूब मात्रा में पिएं। भोजन को ठीक तरह चबाने पर लार (सलाइवा) अच्छी तरह मिल जाने से पानी की आवश्यकता नहीं रह जाती है। यदि आवश्यक हुआ तो ५०-१०० ग्राम जल पिया जा सकता है।
(९) सुबह उठकर दो गिलास पानी पीना आंतों की शुद्धि के लिए हितकारक है। दोनों भोजन (सुबह-शाम) के बीच के समय में पर्याप्त पानी पीते रहें। नित्य अढाई से साढ़े तीन लीटर पानी पीना चाहिये। एक साथ अधिक मात्रा में पानी न पीकर हर घंटे- आधे घंटे बाद पानी पिया जा सकता है।
(१०) शीतल पेय, फास्ट फूड, ब्रेड, बिस्किट, पूड़ी, केक, कचौड़ी, रंग बिरंगी मिठाईयाँ तथा टॉफी, आइसक्रीम, चाय आदि स्वास्थ्य के लिए अहितकर हैं। मैदा खाद्य आंतों से चिपक कर कब्ज पैदा करतें है तथा डिब्बाबंद खाद्य पदार्थों में उनके संरक्षण के लिए कीटनाशक (जहरीले रसायन) मिलाये जाते हैं जो आंतरोग, गठिया, यकृत, फेफड़े आदि के रोग पैदा करते हैं।
(११) स्वस्थ रहने के लिए हमारे खून का माध्यम ८० प्रतिशत क्षारीय एवं २० प्रतिशत अम्लीय होना चाहिये। अतः क्षारीय खाद्य पदार्थ अधिक सेवन करना चाहिए। क्षारीय खाद्य पदार्थ व अम्लीय खाद्य की संक्षिप्त सूची दी जा रही है जिससे हम स्वयं खाद्य चुन सकते हैं।

अम्लीय खाद्य (हानिकारक) :- चीनी, कृत्रिम नमक, मैदा, पॉलिश हुआ चावल, पॉलिश वाली दाल, बेसन, अचार, ब्रेड, बिस्किट, केक, डिब्बा बंद खाद्य पदार्थ, मांस, मिठाईयाँ, तेल, घी आदि।

क्षारीय खाद्य (स्वास्थ्यप्रद) :- गुड़, शहद, ताजा दूध, दही, ताजे सभी फल (जो पककर मीठे होते हैं) सभी हरी सब्जियां, उबला आलू, चोकरयुक्त आटा, छिलका सहित दाल, अंकुरित अन्न, मक्खन, कच्चा नारियल, किशमिश, मुनक्का, छुआरा, अंजीर।

ये खाद्य पचकर खून को अम्लीय या क्षारीय बनाने वाले हैं। नींबू अम्लीय है परन्तु पचकर क्षारीय हो जाता है। अतः नींबू, संतरा, मोसम्मी, अन्ननास आदि क्षारीय की श्रेणी में रखे गए हैं। नींबू को भोजन के साथ नहीं, प्रातः पानी के साथ पीना लाभदायक है। भोजन में कार्बोहाईड्रेट होता है। नींबू डालने से खटास के कारण अन्न के पाचन में कठिनाई आती है क्योंकि कार्बोहाईड्रेट (गेहूं, चावल, आलू) आदि का पाचन-क्षारीय माध्यम में होता है। भोजन के दो घंटे बाद या दो घंटे पहले नींबू को पानी के साथ पी सकते हैं। नींबू कई रोगों से बचाता है। विटामिन 'सी' की पूर्ति करता है। रक्त को साफ रखता है, जीवनी शक्ति और रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।
(१२) भोजन के साथ ताजी चटनी, टमाटर, पालक, पोदीना, आंवला, नारियल आदि ले सकते हैं, परन्तु अचारों से परहेज रखना ही हितकारक है।

खाद्य सम्बन्धी इन मामूली सी बातों का ध्यान रखकर इस दुर्लभ मानव शरीर को, जिसे ईश्वर ने साधन के रूप में दिया है, स्वस्थ रखने का दायित्व हम सबका है। कभी भी गया है-'शरीर आद्यम् खलु धर्मसाधनम्' अर्थात् शरीर को स्वस्थ रखना हमारा प्रथम कर्तव्य है।

-मनोहर आश्रम, उम्मैदपुरा, पो० तारापुर-४५८३३०
जावद-मध्यप्रदेश, जिला नीमच

यह भी ध्यान रखें

* थके हुए, कमजोर, प्यासे, उपवास वाले व्यक्तियों एवं गर्भवती स्त्रियों को हरड़े नहीं खानी चाहिए।
* उपवास काल में रोगी शरीर में नया मल उत्पन्न नहीं होता, इस प्रकार मलशुद्धि द्वारा स्वाथ्य प्राप्त होता है।
* आंवले का सेवन अत्यंत हितावह है। अतः भोजन के प्रारम्भ, मध्य एवं अंत में नित्य सेवन करें।
* प्रकृति के अनुकूल भोजन करें। भोजन के एक घण्टे बाद जल पीना आरोग्य की दृष्टि से हितकर है।
* भोजन के बाद सौ कदम टहलना व बांयी करवट लेटना स्वास्थ्य के लिए अच्छा है।
* दायें स्वर में भोजन और बायें स्वर में पेय पदार्थ लेना स्वास्थ्य के लिए हितकर है।
* भोजन और सब्जी के साथ फलों का रस कभी न लें। दो घण्टे का अन्तर अवश्य रखें।
* दूध के साथ दही, तुलसी, अदरक, लहसुन, तिल, गुड़, खजूर, मछली, मूली, नींबू, केला, पपीता, सभी प्रकार के फल, फ्रूट ज्यूस, फ्रूट आइसक्रीम आदि न खायें।
* फलों का रस दिन के समय ही लें। रात्रि को फलों का रस पीना अच्छा नहीं।
* आम के रस की अपेक्षा आम को चूसकर खाना अधिक गुणकारी है।
* बीमारी में केला, आम, अमरूद, पपीता, कद्दू, टमाटर, दही, अंकुरित अनाज, कमलकंद, पनीर, सूखी सब्जियां, मावा, बेकरी तथा फ्रीज की वस्तुएं, चाकलेट, मक्का, ज्वार, बाजरा, उड़द, आलू, मूंगफली, केला, पपीता आदि मुश्किल से हजम होते हैं। आयुर्वेद ने इन्हें दुर्जर कहा है।
* सिर एवं हृदय पर ज्यादा सेंक नहीं करना चाहिए।
* स्नान से पहले मालिश करें, फिर व्यायाम करें, व्यायाम के आधे घण्टे बाद स्नान करें।

-नरेश सिहाग एडवोकेट आयुर्वेद रत्न

जानते हो! ❒आदित्य प्रकाश

छोटी आयु में किया कमाल

◆ लुईस ब्रेल ने मात्र 15 वर्ष की आयु में ब्रेल लिपि का आविष्कार कर दिया था।

◆ बैबेज ने मात्र उन्नीस वर्ष की आयु में मैकेनिकल कम्प्यूटर का आविष्कार किया था।

◆ वाल्टर लाईन्स ने पन्द्रह वर्ष की आयु में स्कूटर का आविष्कार किया था।

◆ ग्रीनवुड ने 1873 में 15 वर्ष की आयु में ईयरमफ्स का आविष्कार किया था। उसने प्रथम विश्व युद्ध में अमरीकी सैनिकों को इसकी सप्लाई की भी। यह ध्वनिरोधक होता है।

◆ जॉन जे स्टोन पार्कर ने मात्र ४ वर्ष की आयु में अपनी बहन के साथ मिलकर तारे के आकार के एक उपकरण का आविष्कार किया था जो बर्फ को गिलास से बाहर गिरने से रोकता था।

☺☺☺हास्यम्☺☺☺

प्रस्तुति : हर्षित सोनी

एक शराबी एक साधु से टकरा गया।

साधु-(गुस्से से) मैं तुम्हें श्राप देता हूँ।

शराबी-रुकिये महाराज, मैं गिलास लेकर आता हूँ।

☺ ☺ ☺

बहू ने सास के चरण छूते हुए कहा-माता जी ईश्वर करे, मेरी उम्र आपको लग जाये।

सास ने भौंहें टेढ़ी करते हुए कहा-यानी में बूढ़ी हो जाऊँ और तू जवान बनी रहे।

☺ ☺ ☺

डाक्टर ने बेहोश मरीज का चैकअप किया और अफसोस जताते हुए कहा कि मरीज अब नहीं रहा।

मरीज को संयोग से तभी होश आया और उसने डाक्टर की बात सुन उसका विरोध करते हुए कहा- नहीं डाक्टर साहब मैं जिन्दा हूँ।

पास खड़ी नर्स ने मरीज को डाँटते हुए कहा-चुप रहो, तुम डॉक्टर साहब से ज्यादा नहीं जानते।

☺ ☺ ☺

दो मूर्ख नाव में जा रहे थे।

पहला : अरे, अरे नाव में छेद हो गया है। पानी आ रहा है।

दूसरा : अरे कोई नहीं, इसमें दूसरा छेद कर देते है। पानी उसमें से बाहर निकल जायेगा।

☺ शिक्षक-राम, आदमी और गधे में क्या फर्क होता है।

रामू-श्रीमान, बहुत कम फर्क होता है, आदमी को गधा कहा जा सकता है, परन्तु गधे को आदमी नहीं कहा जा सकता।

प्रहेलिका:

❒अनुव्रत आर्य

(१) एक खेत है वृत्ताकार
बूझो उसमें कुएं हैं चार

(२) पत्थर की एक नाव बनाई, पत्थर हुआ सवार।
नाहक दोनों लड़ पड़े, हो गई मारामार।

(३) सिर काटो तो बात बनावे
पैर काट दो दवा बनावे।

(४) सबसे बड़ा कुटुम्ब उसका, आई होते शाम।
दुनिया को अंधा कर डाला, खूब दिया आराम।

(५) घर के ऊपर चोटी मेरी, अंदर मै बैठा चौकोर
शान्त रहूँ जब रहूँ अकेला, सबके सम्मुख करता शोर।

(६) लोहे को है एक मकान, उसमें नीचे एक जवान
पानी पीकर जीता है, सबको ठंडक देता है।

(७) सोने को है एक मकान
उसके अन्दर कोयला खान।

(८) कहीं नहीं मैं आता-जाता, दरवाजे से मेरा नाता
न कुत्ता न चौकीदार, पर कहलाता पहरेदार

बटन, चक्की, दवात, रात, टेलीविजन, कूलर, पपीता, ताला।

विचार कणिका:

❒प्रतिष्ठा

❖ धनी बनना हो तो तन, मन, वचन से चोरी न करें।

❖ सुख-दु:ख तो प्रतिध्वनि है। सुख देने से सुख मिलता है और दु:ख देने से दु:ख।

❖ दरअसल हमें दुनिया को नहीं, स्वयं को जीतना है।

❖ कलह करने से अच्छा है- उपाय करें।

❖ हमारी प्रगति में अगर कोई बाधक है तो वह है हीन भावना। वरना तो पूरी दुनिया को हिला देने की शक्ति एक इंसान में भरी पड़ी है।

❖जिस व्यक्ति का नजरिया निराशाजनक है वह कभी सुखी नहीं हो सकता।

❖बिखरा हुआ मन व्यक्ति की अथाह शक्ति को खण्ड खण्ड कर देता है और एकाग्र मन व्यक्ति को अथाह शक्ति से भर देता है।

❖दूसरों की इज्जत करोगे तो तुम्हारी भी इज्जत होगी।

प्रेरक सत्य कथा

प्रधान मंत्री की महानता

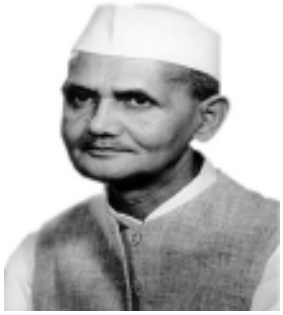

अपने देश के द्वितीय प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री सादगी व महानता की प्रतिमूर्ति थे। उनके जीवन के अनेक प्रसंग हम सबके लिए प्रेरणादायक हैं। उनकी महानता से सम्बन्धित एक प्रसंग प्रस्तुत है–

बात तब की है, जब शास्त्री जी इस देश के प्रधानमंत्री पद को सुशोभित कर रहे थे। एक दिन वह एक कपड़े की मिल को देखने के लिए गए। उनके साथ मिल का मालिक, उच्च अधिकारी व अन्य विशिष्ट लोग भी थे। मिल देखने के बाद जब शास्त्री जी मिल के गोदाम में पहुंचे, तो उन्होंने साड़ियाँ दिखलाने को कहा। मिल मालिक व अधिकारियों ने एक से एक खूबसूरत साड़ियाँ उनके सामने फैला दीं। शास्त्री जी ने साड़ियाँ देखकर कहा,'साड़ियाँ तो बहुत अच्छी हैं। क्या मूल्य है इनका?'

'जी, यह साड़ी आठ सौ रुपए की है और यह वाली एक हजार रुपए की है।' मिल मालिक ने बतलाया।

'ये तो बहुत अधिक दाम की हैं। मुझे कम मूल्य की साड़ियाँ दिखलाइए।' शास्त्री ने कहा। यहाँ स्मरणीय है कि यह घटना १९६५ की है, तब एक हजार रुपए की कीमत बहुत अधिक थी।

'जी, यह देखिए। यह साड़ी पांच सौ रुपए की है और यह चार सौ की।' मिल मालिक ने दूसरी साड़ियाँ दिखलाते हुए कहा।

'अरे भाई, ये भी बहुत कीमती हैं। मुझ जैसे गरीब के लिए कम मूल्य की साड़ियाँ दिखलाइए, जिन्हें मैं खरीद सकूं।' शास्त्री जी बोले।

'वाह सरकार, आप तो हमारे प्रधानमंत्री हैं, गरीब कैसे? हम तो आपको ये साड़ियाँ भेंट कर रहे हैं'–मिल मालिक कहने लगा।

'नहीं भाई, मैं भेंट में नहीं लूंगा।' शास्त्री जी स्पष्ट बोले। 'क्यों साहब? हमें यह अधिकार है कि हम अपने प्रधानमंत्री को भेंट दें।' मिल मालिक अधिकार जताता हुआ कहने लगा।

'हाँ, मैं प्रधानमंत्री हूँ।' शास्त्री जी ने बड़ी शांति से जवाब दिया–'पर, इसका यह अर्थ तो नहीं कि जो चीज मैं खरीद नहीं सकता, वह भेंट में लेकर अपनी पत्नी को पहनाऊं। भाई, मैं प्रधानमंत्री सही, पर हूँ तो गरीब ही। आप मुझे सस्ते दाम की साड़ियाँ दिखलाइए। मैं तो अपनी हैसियत की साड़ियाँ ही खरीदना चाहता हूँ।' मिल मालिक की सारी अनुनय–विनय बेकार गई। देश के प्रधानमंत्री ने कम मूल्य की साड़ियाँ ही दाम देकर अपने परिवार के लिए खरीदीं।

ऐसे महान थे शास्त्री जी, लालच जिन्हें छू तक नहीं सका था।

–वीणा श्रीवास्तव

मनुष्य के तीन मित्र

डॉ० नरेश सिहाग एडवोकेट संपादक बोहल शोध मंजूषा

किसी शहर में एक आदमी रहता था। उसके तीन दोस्त थे। जिनमें से एक मित्र ऐसा था जिसके लिए वह जान देता था। दूसरे दोस्त के लिए वह सोचता था कि कभी न कभी मौके पर काम आ ही जाएगा। तीसरे दोस्त की तरफ वह कम ध्यान देता था। एक दिन अचानक उस पर मुसीबत आ पड़ी, उस पर संगीन (गम्भीर) मुकद्दमा दायर हो गया। वह भागा–भागा अपने अन्तरंगतम दोस्त के पास पहुंचा, जिस पर वह जान देता था। उसने अपनी सारी राम–कहानी कह सुनाई। पहले दोस्त ने कहा–भाई, हमारी–तुम्हारी मित्रता तो है, परन्तु यह घर तक ही सीमित है। घर के बाहर के झगड़ों में मैं साथ नहीं दे सकता। निराश होकर वह दूसरे दोस्त के पास गया और अपनी राम–कहानी सुनाई। उसने कहा मैं तुम्हारा साथ तो दूंगा, परन्तु कचहरी के बाहर तक। भीतर जाकर तो तुम्हें अपना मुकद्दमा अपने–आप लड़ना होगा। दोनों दोस्तों की बातों से निराश होकर उसने तीसरे दोस्त का दरवाजा खटखटाया। अपनी सारी राम–कहानी सुनाई। तीसरा दोस्त तत्काल उसके साथ हो लिया व घर के बाहर, कचहरी में जाकर उसका मुकद्दमा लड़ा।

प्रत्येक आदमी के तीन दोस्त होते हैं। पहला दोस्त धन–सम्पत्ति है, दूसरा दोस्त सगे–सम्बन्धी हैं, तीसरा दोस्त सत्कर्म, निष्काम कर्म हैं। प्रत्येक आदमी सम्पत्ति, धन को सबसे बड़ा (प्रिय) दोस्त समझता है, उसके लिए जान तक दे देता है, परन्तु मुसीबत आने पर वह साथ नहीं देता। दूसरा दोस्त है=सगे–सम्बन्धी; वे मृत्यु के बाद कचहरी (श्मशान) के दरवाजे तक ले जाकर छोड़ आते हैं। तीसरा दोस्त है= सत्कर्म (अच्छे कर्म), निःस्वार्थ कर्म– जो न केवल इस जीवन में, बल्कि इसके बाद की कचहरी में भी हमारे साथ जाते हैं–उन्हीं को हम भूले रहते हैं।

–गुगन निवास २६, पटेल नगर भिवानी–१२७०२१(हरियाणा)

भजनावली

स्व० पं० चन्द्रभानु आर्य संस्थापक शांतिधर्मी

रहा किसी में दम कोन्या

त्याग भाव से काम करै ये रहा किसी में दम कोन्या।
देख लिया संसार घूम कै कोई किसी से कम कोन्या।।टेक

चार सौ बीसी करैं रात दिन सत्य धर्म को छोड़ दिया।
लोक लाज और परम्परा की मर्यादा को तोड़ दिया।
ईमानदारी शिष्टाचार को मक्कारी से जोड़ दिया।
धर्म निरपेक्ष राज ने आके धर्म कर्म से मोड़ दिया।।
धर्म के कारण प्राण गंवावैं कहें बावले हम कोन्या।।१।।

इधर देख लो व्यापारी भी रंग हल्दी में मिला रहा।
कहीं दूधिया मजदूरों को दूध में पानी पिला रहा।।
कहीं ज्योतिषी पतरे वाला बातों का घड़ किला रहा।
मिट जाएँगे कुछ दिन में गर देश का ये सिलसिला रहा।।
झूठ और सच का दुनिया में कभी हुआ संगम कोन्या।।३

बाबू लेडी पढ़ लिख कर के काम बाण के फैर करैं।
एक से एक नया फैशन और बाजारों की सैर करैं।।
पानी की तरह बहा दें पैसा मात पिता से बैर करैं।
ऐसे लोगों पर तो हमेशा राज जगत् में गैर करैं।।
गुरुओं का दें काढ़ जनाजा कहैं हमारे सम कोन्या।।३।।

लाखों में दो चार बचे हैं करने से रिश्वतखोरी।
पुलिस महकमा रक्षक है पर करवादे मिलकर चोरी।।
राम राज करके छोडेंगे बोल्लैं साफ झूठ कोरी।।
देश के नेता भटक रहे हैं जनता आज दुखी होरी।
चन्द्रभान ना कोई हमारा और किसी के हम कोन्या।।४।।

(रचनाकाल १९६८)

शराबी की दु:खी पत्नी

'बलिदान' (१९९१) में प्रकाशित

जेठ मेरा खेती करता हे, हे मेरा देवर सर्विस मैन,
ऊतणी का दारू काढ़ै हे, जाये रोये नै तोड़ दिये हाड।।
जेठ मेरा अन्न उठावै हे, हे आढ़ती पै ल्यावै नोट,
ऊतणी का थाने मैं जावै हे जाये रोये नै तोड़ दिये हाड़।।
जेठ मेरा न्याय चुकावै हे हे जहाँ पर भी हो पंचायत,
ऊतणी का पिट कै आवै हे जाये रोये नै तोड़ दिये हाड़।।
देवर मेरा प्लाट खरीदै हे हे उने कोठी कर ली त्यार,
ऊतणी का किल्ला बेचै हे, जाये रोये नै तोड़ दिये हाड़।।
जेठ मेरा जलसे करावै हे, हे आता है **चन्द्रभान**
ऊतणी का सांग नचावै हे जाये रोये ने तोड़ दिये हाड़।।

किया दुनिया का भला आर्यों ने

कौन कहै सै करा नहीं दुनिया का भला आर्यों ने।
सच पूछो तो तोड़ा है पाखण्ड का किला आर्यों ने।।

हमारा राजस्थान पढ़ो, जो महर्षि ने काम किया।
सन १८५७ में लड़ने का प्रोग्राम किया।
कृष्ण वर्मा ने लन्दन में जाकर के इंतजाम किया।
अंग्रेजों भारत छोड़ो, ऐलान था ये सरेआम किया।।
मरने मारने का चालू, कर दिया सिलसिला आर्यों नै।।१।।

मुसलमानों ने भारत में संस्था तबलीग बनाई थी।
मुरदम शुमारी में हिन्दुओं की संख्या बहुत घटाई थी।
श्रद्धानन्द ने गाँधी जी को सब बातें समझाई थीं।
गाँधी जी ना माने तो फिर शुद्धि सभा बनाई थी।।
बदले में गोली खाई थी, ये फल मिला आर्यों ने।।२।।

राम-कृष्ण के बेटे यहाँ मुर्दों से रोज डरा करते।
भूत प्रेतों के भय से, अनगिन नौजवान मरा करते।
डोरी, गण्डे, गहने बाधे घरों में रोज करा करते।
पोप रोप रहे थे चाला नित ढोंगी पेट भरा करते।
उजड़े हुए बगीचे को फिर से दिया खिला आर्यों ने।।३।।

इतने पर भी गाली देते आर्यों को कुछ बंदे हैं।
उनका दोष बताएँ क्या संस्कार ही जिनके गन्दे हैं।
झूठ बोलना, ठगी करना, चोरी जारी के धंधे हैं।
आँखें दीखें खुली हुई, पर वे अक्कल के अंधे हैं।
चन्द्रभान कहे मक्कारों से सदा है गिला आर्यों ने।।४।।

'प्रकाश स्तम्भ' (१९८४) में प्रकाशित

तर्जे बयानी हो तो ऐसी हो।।

देश के काम जो आये जवानी हो तो ऐसी हो।
कभी जो खम नहीं खाये पेशानी हो तो ऐसी हो।।

रही जेलों में रावण की, नहीं वृत्ति डिगी मन की,
खाक छानी थी बन बन की, जो रानी हो तो ऐसी हो।।

शाह ने कर दिया चाला, पति को जेल में डाला,
पद्मिनी ने वो निकाला, जनानी हो तो ऐसी हो।।

पति अपने की संपत्ति नहीं जिन्दा जी जाने दी,
लड़ी अंग्रेज के संग जो महारानी हो तो ऐसी हो।

बना दे मोम को पत्थर और पत्थर को पिंघला दे,
चन्द्रभानु तेरी तर्जे बयानी हो तो ऐसी हो।।

जीरो बजट प्राकृतिक कृषि में है बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने की क्षमता: आचार्य देवव्रत

कृषि विवि ने माना प्राकृतिक खाद के इस्तेमाल से बढ़ी उर्वरक क्षमता

कुरुक्षेत्र, जीरो बजट प्राकृतिक कृषि के द्वारा न केवल बंजर भूमि को उपजाऊ बनाया जा सकता है बल्कि यही वह पद्धति है जिससे भारत का किसान सुखी और स्वस्थ हो सकता है। अब देश के कृषि वैज्ञानिकों ने भी इस बात को स्वीकार किया है। हरियाणा कृषि विश्व विद्यालय, हिसार की एक रिपोर्ट में यह दावा किया गया है कि जिस भूमि का जैविक कार्बन .40 था, उस पर जब जीरो बजट प्राकृतिक कृषि की गई तो एक वर्ष के अन्दर ही जैविक कार्बन 0.82 से 1.12 प्रतिशत तक बढ़ गया जिससे प्रमाणित होता है कि इस पद्धति से बंजर भूमि को भी उपजाऊ बनाया जा सकता है। यह जानकारी गत २३ अगस्त को गुरुकुल कुरुक्षेत्र के संरक्षक एवं हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने गुरुकुल में एक प्रैसवार्ता में दी। उनके साथ गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह, डॉ० सम्पूर्ण सिंह, डॉ० हरिओम आदि भी उपस्थित रहे। आचार्य देवव्रत ने कहा कि वे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी से मिलकर जीरो बजट प्राकृतिक कृषि को बढ़ावा देने पर चर्चा करेंगे, जिससे अधिकतम किसान इस पद्धति को अपनाएं और देश में जहरमुक्त खेती की परम्परा फिर से आरम्भ हो। उन्होंने बताया कि हरित क्रांति के बाद कीट नाशकों के अंधाधुंध प्रयोग से किसानों को जमकर मुनाफा हुआ, लेकिन कीट नाशकों व रासायनिक खाद ने न केवल जमीन की उर्वरक क्षमता को कम कर दिया, बल्कि खाद्यान्न भी बीमारियों के कारण बन गए। प्राकृतिक खाद से होने वाली जीरो बजट खेती न केवल किसानों की फसलों के दाम दो गुणा बढ़ाएगी बल्कि इससे रोगमुक्त अनाज व अन्य फसलें भी मिल पाएँगी। प्राकृतिक खाद से उगाई गई गेहूं की बाजार कीमत ४ हजार रुपए से ५ हजार रुपए प्रति क्विंटल है, जबकि रसायनिक कीटनाशक प्रयोग करके तैयार गेहूं की कीमत आमतौर पर १७०० से २००० रुपए प्रति मिलती है, जबकि रासायनिक खादों की कीमत भी बहुत अधिक होती है। कृषि वैज्ञानिक डॉ० हरिओम ने हिसार कृषि विश्व विद्यालय की रिपोर्ट की पुष्टि करते हुए कहा कि कुरुक्षेत्र गुरुकुल की २०० एकड़ भूमि में वर्ष २०१५ से प्राकृतिक खाद व घनजीवामृत का इस्तेमाल किया गया था। मात्र ३ वर्ष में इ ाूमि के जैविक कारबन में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है। जांच में यह भी पाया गया कि कृषि भूमि में फास्फोरस भी लगभग २ गुणा हुआ है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिकों तथा हरियाणा कृषि विश्व विद्यालय व पंजाब विश्वविद्यालय सहित विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी संगठनों के कृषि वैज्ञानिकों ने भी इस विधि को खेती के लिए लाभप्रद बताया है। जीरो बजट प्राकृतिक खेती से घटते जलस्तर पर रोक लग सकेगी, क्योंकि रासायनिक दवाइयाँ और कीटनाशक बेहद गर्म होते हैं, जोकि अत्यधिक पानी की खपत मांगते हैं। जीरो बजट प्राकृतिक खेती किसानों के लिए वरदान सिद्ध हो रही है क्योंकि इसमें किसान को कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ेगा और उसकी फसल भी अच्छी होगी। (वि० प्र०)

गुरुकुल के छात्र को हार्दिक बधाई

दीपक कुमार आर्य ने एशियन गेम्स २०१८ मे भारत को रजत पदक दिलवाया। जकार्ता में ३० वर्षीय निशानेबाज ने १० मीटर एयर राइफल में सिल्वर मेडल जीता। गुरुकुल देहरादून के छात्र दीपक धारा प्रवाह संस्कृत बोलते हैं और गुरुकुल से मिली शिक्षा को फैलाने की कोशिश करते हैं। उन्होंने कहा कि जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा उन्हें स्वामी दयानंद सरस्वती जी द्वारा लिखी गयी सत्यार्थ प्रकाश से मिली है। खेल मंत्री राज्यवर्धन राठौड़ ने भी दीपक कुमार को मेडल जीतने पर बधाई दी। राठौड़ ने ट्वीट कर लिखा, 'देहरादून के गुरुकुल से निकलकर एशियन गेम्स २०१८ में मेडल जीतना। दीपक कुमार की अविश्वसनीय यात्रा। १० मीटर एयर राइफल इवेंट में सिल्वर मेडल जीतने पर दीपक को बधाई। पूरे देश को आप पर गर्व है।'

प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारियों का प्रतिभा-प्रदर्शन

उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा आर्ष गुरुकुल नोएडा में विभिन्न वर्गों में अनेक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। इनमें भारत के अनेक गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों ने भाग ग्रहण किया। गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग ग्रहण किया और सभी में प्रथम स्थान प्राप्त कर गुरुकुल का मान बढ़ाया। अष्टाध्यायी सूत्रान्त्याक्षरी प्रतियोगिता के कनिष्ठ वर्ग में ब्र० शिवांश एवं आँतेश तथा वरिष्ठ वर्ग में ब्र० अजय एवं ओमेन्द्र ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। संस्कृत भाषण प्रतियोगिता के कनिष्ठ वर्ग में ब्र० राजदीप तथा वरिष्ठ वर्ग में ब्र० रोहित ने प्रथम स्थान प्राप्त कर गुरुकुल का गौरव बढ़ाया। प्रतिभागियों के गुरुकुल पहुँचने पर सभा का आयोजन कर विजित विद्यार्थियों का अभिनन्दन किया गया। गुरुकुल के कुलाध्यक्ष पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने अपने आशीर्वचन देते हुए कहा कि- प्रतियोगिताएँ आत्मनिरीक्षण का अवसर प्रदान करती हैं। इस प्रकार की प्रतियोगिताओं से अपने अन्दर परिष्कार करते हुए अपने ज्ञान का संवर्द्धन करते रहना चाहिए।

सिनसिनाटी में हुई नये आर्यसमाज की स्थापना

भारत से अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अटलांटा में आये हुए वैदिक विद्वान आचार्यश्री आनन्द पुरुषार्थी का हमारे नगर सिनसिनाटी में एक निजी यज्ञ करवाने के लिए आगमन हुआ। पुरुषार्थी जी ने वेदमंत्रों की व्याख्या करते हुए हम सभी को स्वाध्याय, यज्ञ, उपासना आदि का संकल्प दिलवाया और आर्य समाज का गठन कर दिया। सभी नव नियुक्त अधिकारियों को आर्यसमाज व वैदिक धर्म की मान्यताओं के अनुकूल चलने की शपथ दिलवाई, हिंदी व अंग्रेजी का साहित्य वितरित किया। अमेरिका आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री विश्रुत आर्य ने सभी को मोबाइल पर बधाई दी और इसके कार्यकलापों को भविष्य में चलाते रहने के लिए हर प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया। सार्वदेशिक सभा के मंत्री श्री प्रकाश आर्य जी, श्री विनय आर्य ने भी शुभकामनाएं प्रदान की। यह नगर शिकागो से ४६३ और अटलांटा से ७२४ किमी की दूरी पर है। भारत से ही १०-२० वर्ष पूर्व आये हुए हम लोग विभिन्न धार्मिक सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। हम लोगों को आर्यसमाज के सिद्धांतों का कोई विशेष ज्ञान नहीं है, पर आचार्यजी के व्याख्यान से ऐसा लगता है कि ईश्वर की कोई विशेष कृपा हमारे ऊपर हुई है जो हमें आर्यसमाज जैसी सर्वोत्तम संस्था से जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आर्यसमाज के वरिष्ठ महानुभाव हम लोगों का यथासम्भव मार्गदर्शन करेंगे तो निश्चय ही यह आर्यसमाज भी अमेरिका के सक्रिय आर्यसमाजों के साथ खड़ा हो सकेगा।

नवनियुक्त अधिकारियों की सूची संरक्षक-श्रीमती कृष्णा रावल माता जी; प्रधान डॉ० अरुण नागपाल, उपप्रधान : श्रीमती सीमा शिवहरे; मंत्री : श्री रवि त्रिवेदी; उपमंत्री : श्री दिनेश मग्गू अंतरंग सदस्य : श्रीमती अंजना ठक्कर, सर्वश्री संतकुमार शिवहरे, अमर नागपाल, श्री राज साहनी

रवि त्रिवेदी मंत्री, आर्य समाज, सिनसिनाटी, संयुक्त राज्य अमेरिका

बल्ला गांव में दादा खेड़े पर सुमन मान ने कराया यज्ञ

बल्ला : धार्मिक स्थल दादा खेड़े पर वातावरण की शुद्धि और सुख शांति के लिए हवन-यज्ञ का आयोजन किया गया। यजमान की भूमिका सरपंच दिलावर मान ने निभाई। जींद से आई आचार्या सुमन आर्या ने वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ यज्ञ करवाया। सुमन आर्या ने यज्ञ में उपस्थित लोगों को बताया कि सृष्टि से आज तक यज्ञ ही ईश्वर की सच्ची पूजा एवं वातावरण से बीमारियों को खत्म कर डॉक्टरों से छुटकारा पाने का एकमात्र वैज्ञानिक नियम है। यज्ञ करने वाला अंधविश्वास एवं ढोंगी बाबाओं के चक्कर से भी दूर रहता है। इस अवसर पर प्रसाद भी वितरित किया गया। आस्था आर्या ने भगवान आर्यों को ऐसी लगन लगा दे, भजन पेश किया। यज्ञ में सिचाई विभाग के एसडीओ दीपक मान, राजसिंह, आजाद मान, गगन, अमन व आनंद ने भी आहुति डाली।

श्रीकृष्ण जी के जीवन पर कार्यशाला का आयोजन

गत १९ अगस्त को आर्यसमाज मन्दिर न्यु मुल्तान नगर दिल्ली में श्रीकृष्ण जी पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुख्यवक्ता के रूप में सोशल मीडिया प्रचारक डॉ० विवेक आर्य (शिशु रोग विशेषज्ञ) ने प्रमाणों के आधार पर बताया कि पुराणों में श्रीकृष्ण का काल्पनिक चित्रण है जबकि अनुसरण करने योग्य श्रीकृष्ण का वर्णन महाभारत में मिलता है। उन्होंने बताया कि श्रीकृष्ण के चरित्र के साथ सबसे अधिक खिलवाड़ किया गया है। उनके वास्तविक नीतिनिपुण और योगिराज जैसे गुणों का अनुकरण न करके रसिया, गोपीवल्लभ जैसे कल्पित नामों से सम्बोधित कर उनके साथ अन्याय किया गया है। स्वामी दयानन्द ने सर्व प्रथम श्रीकृष्ण जी को आप्त पुरुष बताया था, जिसका अनुसरण बंकिम चंद्र चटर्जी व अन्य विद्वानों ने किया। आज के समय श्रीकृष्ण जी के वास्तविक स्वरूप के प्रचार की अत्यंत आवश्यकता है।

-राजकुमार आर्य, प्रधान

आर्यसमाज सुलतान बाजार, हैदराबाद में श्रावणी पर्व

आर्यसमाज सुलतान बाजार, हैदराबाद का श्रावणी वेद प्रचार सप्ताह २५ अगस्त को सम्पन्न हुआ। वैदिक विद्वान् आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी ने कहा कि अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, तप, स्वाध्याय व ईश्वर प्रणिधान आदि गुण सभी मनुष्यों के लिये समान रूप से उपयोगी व आवश्यक हैं। इस कारण संस्कृति मनुष्यों के लिये भिन्न-भिन्न नहीं हो सकती है अपितु सब मनुष्यों की संस्कृति एक होती है। आर्य भजनोपदेशक पण्डित प्रताप आर्य व पण्डित नेत्रपाल आर्य ने ईश्वर भक्ति व यज्ञ महिमा के भजन व गीतों से श्रद्धालुओं को मन्त्रमुग्ध किया। माता निर्मला व आचार्या मैत्रेयी शास्त्री के ब्रह्मत्त्व में बृहद् यज्ञ सम्पन्न हुआ।

वेद ही ईश्वरीय ज्ञान -- पृष्ठ १९ का शेष

देता है। भावी जीवन में चाहे इस मूर्ति से उसका कोई वास्ता पड़े या नहीं, किन्तु दयानन्द के लिए यह बात नहीं थी। उन्होंने तो वेदों से सचमुच अपने कार्य की प्रेरणा ली थी। दयानन्द ने वेदों के साथ बिना शर्त जुड़ने की बात कही और कहा कि विशुद्ध तथा सामाजिक एवं नैतिक सुधार के मूल सूत्र वेदों में ही उपलब्ध हैं।'

महर्षि दयानन्द जी के वेद भाष्य के बारे में योगी अरविन्द जी लिखते हैं-'वैदिक व्याख्या के बारे में मेरा यह विश्वास हो चुका है कि वेदों की अन्तिम पूर्ण व्याख्या चाहे कुछ भी हो, दयानन्द प्रथम सत्य मार्गदर्शक के रूप में सम्मानित किए जाएँगे। समय ने जिन द्वारों को बन्द कर दिया था, दयानन्द ने उनकी चाबियों को पा लिया और बन्द पड़े हुए स्रोतों की मुहरों को तोड़ कर परे फैंक दिया।'

महर्षि दयानन्द जी का जीवन में-सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने का, सर्वदा मूलमन्त्र रहा है। उन्होंने वेदों के सत्य अर्थ करने का मार्ग प्रशस्त करके वेदों को पुनः वरणीय सिद्ध किया है। इससे विश्व का निश्चित रूप से कल्याण हुआ है और भविष्य में भी होगा। वेद वास्तव में ही ईश्वरकृत, निर्भ्रान्त, सार्वभौमिक, ज्ञान-विज्ञानयुक्त और समस्त सत्य विद्याओं का पुस्तक है, पर अपने आलस्य और प्रमाद के कारण आर्य जाति आधुनिक युग में भी इस ओर नहीं मुड़ पा रही है। पुनश्च यह अकाट्य सत्य है कि किसी भी समाज, राष्ट्र या व्यक्ति का वास्तविक उत्थान केवल वेद को अपनाने से ही हो सकेगा। इसीलिए महर्षि जी ने वेदों का पढ़ना-पढ़ाना सब आर्यों का परम धर्म बताया है।

महर्षि दयानन्द जी ने जिस ढंग से परिश्रम करके वेदों का उज्ज्वल स्वरूप संसार के सामने रखा, उससे कालान्तर में भारत ही नहीं विदेशों में भी वेदों के प्रति लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया और थौरियो, मोनस, लिओन डेलबोस, महान दार्शनिक वोलटेयर, पावगी, डॉ॰ रेले, सर विलियम जोन्स, जैकालियट, ब्रॉन, टालस्टाय, मोरिस मेटलिंक, डायन, प्रो॰ एमर्सन, तथा एडवर्ड कोर कारपेंटर आदि पाश्चात्य विद्वानों ने भी वेद-उपनिषद् आदि साहित्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। जापान में तो हाल ही में वेद का विषय विद्यालयों की शिक्षा तक अनिवार्य कर दिया गया है और भविष्य में इसे कालेज स्तर तक लागू करने पर भी विचार किया जा रहा है। आज नहीं तो कल समूचे विश्व को वेद अपनाने से ही सुख और शान्ति प्राप्त हो सकेगी अतः हमें वेदाध्ययन को उच्च प्राथमिकता देकर उसे अपने जीवन का अंग बनाने की आवश्यकता है।

मतान्तरण नहीं है -- पृष्ठ ११ का शेष

केवल अपने राजनैतिक अधिकारों को प्रकट करने के लिए ही बौद्ध बने हैं। बौद्ध मत को जीने या जानने में उनकी कोई रुचि नहीं है। पर यह एक विशुद्ध राजनीतिक आंदोलन है व आध्यात्मिक एवं अहिंसा से उनका कुछ भी लेना देना नहीं है। (टाइम्स ऑफ इंडिया ३० जून १९९२)

आज मनुस्मृति के नियमों का पालन भारत के राज्य या समाज में कहीं भी नहीं हो रहा है, फिर भी जाति अभिमानियों के अन्याय व अत्याचार का कारण मनुस्मृति को बताया जा रहा है और तथाकथित पीड़ितों द्वारा महर्षि मनु को गाली देकर मनुस्मृति जला दी जाती है, जबकि आरोपियों ने मनुस्मृति के दर्शन भी नहीं किए होंगे और जलाने वालों ने भी उसे जलाया है, पढ़ा कभी नहीं। नारी व दलित विरोधी कहकर मनुस्मृति जलाने वालों ने कभी महिलाओं की तलाक आदि की आजादी छीनने वाली कुरान के बारे में कुछ कहने की हिम्मत दिखाई होती!

पहले तो तथाकथित धर्म के ठेकेदारों ने हिंदू समाज के दलित वर्ग पर अत्याचार कर समाज से अलग रखा। इसका लाभ उठाया ईसाई व मुसलमानों ने। जब हिंदू समाज के प्रभावशाली लोगों ने इन्हें मान-सम्मान दिलाकर समरसता का प्रयास किया तो अंग्रेजों ने 'फूट डालो और राज करो' की नीति से दलित समाज को अलग रखा। आजादी के ७० वर्ष बाद भी अलगाववाद का विषैला खेल जारी है। देश के मीडिया और राजनेताओं द्वारा 'दलित की मौत' 'दलित महिला से बलात्कार' 'दलित पर अत्याचार' जैसी शब्दावली का प्रयोग कर हिंदू समाज में अलगाव का जहर घोला जा रहा है। आज आल इंडिया मजलिस-ए- इत्तेहादुल मुसलमीन (AIMIM) के नेता ओवैसी बंधु (भारत माता की जय न बोलने वाले) डॉक्टर अंबेडकर के नाम का प्रयोग कर हिंदुओं (दलितों) को अपने जाल में फंसाने के लिए 'अंबेडकर, इस्लाम और समता' के सेमीनार आयोजित कर रहे हैं। मुसलमानों और दलितों की समस्याएं एक ही बता कर उन्हें उनके भाईयों से अलग कर रहे हैं।

हमें इतिहास का यह कटु अनुभव नहीं भूलना चाहिए कि ओवैसी बंधुओं की पार्टी की तरह देश विभाजन के समय मुस्लिम लीग ने भी 'मुस्लिम-अनुसूचित जाति भाई-भाई' का नारा दिया था और उस के शिकार हुए थे श्री जोगेंद्रनाथ मंडल, जिन्होंने कोलकाता हिंसा व नोआखली दंगों में हिंदुओं का कत्लेआम देखकर भी मुस्लिम लीग का समर्थन व सहयोग किया था। उनके कहने पर अनुसूचित जाति के ७० लाख लोग पाकिस्तान में रह गए थे। जोगेंद्रनाथ मंडल पाकिस्तान में कानून एवं श्रम मंत्री बने, पर बाद में दलितों पर हुए मुस्लिम अत्याचार को देखकर उनका मोह भंग हुआ और उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। तत्कालीन प्रधानमंत्री लियाकत अली खान को ८ अक्टूबर १९५० को लिखे पत्र में उन्होंने अपना दर्द रोते हुए लिखा था कि मुस्लिम अत्याचारों के कारण देश बंटने के बाद पूर्वी पाकिस्तान से करीब ५० लाख हिंदू पलायन कर चुके हैं।

राजनीतिक स्वार्थ के लिए डॉक्टर अंबेडकर की आड़ में हिंदुत्व से द्वेष करने वाले धृतराष्ट्रों को डॉ० अंबेडकर का यह कथन भी याद रखना चाहिए- 'हिंदुओं में सामाजिक बुराइयाँ हैं, किंतु एक अच्छी बात है कि उनमें उसे समझने वाले और उसे दूर करने में सक्रिय लोग भी हैं, जबकि मुस्लिम यह मानते ही नहीं कि उनमें बुराइयां हैं और इसलिए उसे दूर करने के उपाय भी नहीं करते।' इस कथन की सत्यता का ताजा उदाहरण देखिए- तीन तलाक से पीड़ित मुस्लिम महिलाओं ने इस अत्याचार से मुक्ति पाने के लिए न्यायालय का दरवाजा खटखटाया और उसमें विजय पाई, तो मुस्लिम नेताओं और जनता ने शोर मचाया कि सरकार हमारे मजहब में दखल दे रही है, उसे ऐसा नहीं करना चाहिए। दुर्भाग्य से कुछ तथाकथित सेकुलर भी उनके समर्थन में खड़े हो गए। मुस्लिम महिलाओं की कुछ सुविधा में भी उन्हें हिंदुत्व का प्रचार नजर आया।

प्रबुद्ध पाठक जानते हैं कि रूस, चीन से उधारी पाई दृष्टि वालों को राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध, नानक, दयानंद आदि में कुछ भी महानता नजर नहीं आती। वे भारत को मार्क्स, लेनिन व माओ की नजरों से देखते हैं। वर्षों से शिक्षा संस्थानों में घुसकर इन्होंने देश-विरोधी शिक्षा का प्रचार किया। दिल्ली यूनिवर्सिटी व जेएनयू में कुछ छात्र-छात्राओं व प्राध्यापकों की जिस मानसिकता को देशवासियों ने देखा है, यह उसी विषैले प्रचार का प्रभाव है।

किसी विषय में मजहबी दुष्प्रचार के कारण युवा मन भटक न जाए, अत: डॉक्टर चंद्रशेखर लोखंडे के शब्दों में कहना चाहता हूं कि- 'हिंदू समाज को अपमानित करने के लिए सामाजिक और धार्मिक बुराइयों को निमित्त कारण बनाया जाता है। किस मजहब में बुराइयाँ नहीं हैं? क्या इस्लाम में अंधविश्वास, धर्मान्धता, ऊंच-नीच नहीं है? क्या ईसाइयों में विलासिता, व्यसन, धार्मिक अविवेक नहीं है? बौद्ध धर्म में अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है, लेकिन चीन, जापान, मलेशिया, श्रीलंका, भारत में नवबौद्धों में जितनी प्राणियों की हिंसा होती है, उतनी अन्य मतों में शायद ही होती हो; फिर इन मजहबों की ओर कोई अंगुली नहीं उठाता, उन्हें उपदेश देने कोई आगे नहीं आता। बाहर-भीतर के नेता सभी हिंदुओं को लताड़ने के लिए आगे आते हैं। इसका सबसे बड़ा कारण यही है कि यह समाज हर दृष्टि से बिखरा पड़ा है।' ❐❐

चौथा साधन : क्षत्र (पृष्ठ २३ का शेष)

कि यह शरीर तो पंच तत्त्वों का बना हुआ निश्चित ही नाशवान् है पर आत्मा कभी नष्ट नहीं होता, इसलिए संसार के सांत सुखों और प्रलोभनों की खातिर उसे कभी नहीं गिराना चाहिए। महाभारत के शब्दों में–

न जातु कामान्न भयान्न लोभात्
धर्मं त्यजेत् जीवितस्यापि हेतोः।।
धर्मो हि नित्यो सुख दुःखे त्वनित्ये
जीवो नित्यस्तस्य हेतुरनित्यः।।

काम, भय, लोग अथवा इस जीवन की रक्षा के लिए अपनी आत्मा (धर्म) का त्याग न करें। यह आत्मा नित्य है। सांसारिक सुख दुःख तो अनित्य हैं। आत्मा नित्य है, उसका यह पार्थिव शरीर तो अनित्य है।

शनैः शनैः सतत साधना

प्रजापति ऋषि ने जीवनदर्शन के इन चारों उपायों का उपसंहार करते हुए कहा– मानव जन्म की सफलता इसी में है कि वह जीवन यात्रा के तरीकों को ठीक प्रकार समझे। शरीर को आत्मा के अधीन करे, न कि आत्मा शरीर का गुलाम हो जाए। शरीर की रक्षा भी आवश्यक है क्योंकि आत्मा का निवास इसी में है, पर इस सत्य को कभी न भूलो कि शरीर केवल साधन है, साध्य नहीं है।

आहारार्थं कर्म कुर्यात् अनिन्द्यम्
कुर्यादाहारं प्राणसंधारणार्थम्।
प्राणाः संधार्यास्तत्त्व जिज्ञासनार्थम्,
तत्त्वं जिज्ञास्यं येन भूयो न दुःखम्।।

शरीर को चलाने के लिए भोजन चाहिए और भोजन के लिए कुछ काम करना चाहिए, पर काम ऐसा करो जो निंदनीय न हो और भोजन इतना ही करो, जिससे शरीर के प्राण चलते रहें। प्राणों की गति का लक्ष्य केवल भोजन ही न हो, किंतु आत्मतत्त्व को जानने की इच्छा सदा रहे और यह तत्वज्ञान इसलिए हो कि फिर दुःख की प्राप्ति न हो।

इसी आत्मतत्व को जानने के लिए शनैः शनैः प्रतिदिन अभ्यास करना चाहिए। इस आत्मा के भीतर विशाल शक्ति का भंडार है। वेद के शब्दों में–

अयुतोऽहमयुतो म आत्माऽयुतम् अयुतोऽहं सर्वः।।
अथर्व० १९/५१

मैं अनंत शक्ति वाला हूँ। मेरा आत्मा अनंत शक्ति वाला है। मैं सब ओर से अनंत शक्तियुक्त हूँ।

प्रजापति ऋषि ने कहा– निरंतर और दृढ़ संकल्प तथा श्रद्धा की भावना के साथ जो साधना करता है वह उच्चतम पद को प्राप्त करता है। वेद में एक ऐसा साधक कहता है–

पृष्ठात् पृथिव्यां अहमन्तरिक्ष
मारुहमन्तरिक्षाद् दिवमारुहम।
दिवो नाकस्य पृष्ठात्
स्वर्ज्योतिरगामहम्।। अथर्व० ४/१४/३

साधना करता हुआ मैं पृथ्वी से ऊपर अंतरिक्ष में, अंतरिक्ष से द्यौलोक में तथा वहाँ से आनंददायक ज्योति को प्राप्त होता हूँ। अर्थात् क्रमशः अभ्यास करता हुआ, नीचे से ऊपर उठता हुआ मानव ज्योतिपुंज ब्रह्म के समीप पहुंच जाता है।

शिष्यों को संबोधित करते हुए ऋषिवर ने कहा– इस मार्ग पर चलते हुए तुम निश्चय ही विजय को प्राप्त करोगे।

शिष्यों ने जीवन की सफलता के सारभूत चार साधनों के उपदेश के लिए ऋषिवर का हृदय से धन्यवाद ज्ञापित किया और पुनः एवमेव उपदेश प्रदान करने की प्रार्थना की। ❐❐

कठुआ, (जम्मू कश्मीर) में सम्पन्न हुए वेद प्रवचन

कठुआ, (जम्मू कश्मीर) आर्यसमाज मन्दिर में १५ जुलाई से २९ जुलाई तक भव्य श्रावण मास वेद कथा का आयोजन किया गया। इस आयोजन में हरयाणा (उचाना मण्डी) से पधारे उपदेशक पण्डित रामेश्वर आचार्य ने उपस्थित श्रद्धालुओं को वैदिक उपदेश दिया। उन्होंने कहा कि वेद के अनुसार जीवन यापन करने से हमारा जीवन सुखपूर्ण होता है और परलोक भी उत्तम होता है। श्रावणी पर्व के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि वेदोपदेश के श्रवण, मनन, निदिध्यासन से ही ईश्वर का साक्षात्कार संभव है। ब्रह्मा से लेकर दयानन्द तक सभी ऋषि–मुनि एक मत से वेद को ईश्वरीय ज्ञान और स्वतः प्रमाण मानते आये हैं। यह श्रावणी पर्व वेद के श्रवण के लिये ही है। कार्यक्रम में भजनों का आयोजन भी हुआ। संयोजक विशन भारती ने बताया कि यहाँ विगत १० वर्षों से प्रतिवर्ष इस कथा का आयोजन होता है। आयोजन समिति द्वारा पण्डित रामेश्वर जी का अभिनन्दन भी किया गया।

बिन्दु बिन्दु विचार संकलन

❐भलेराम आर्य, सांघी वाले 9416972879

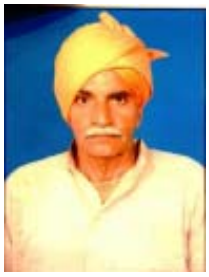

◆सारा जीवन फूलों पर चलते रहे हो अब यदि रास्ते में कंकड़ पत्थर तथा कांटे आ गए हैं तो घबराते क्यों हो? इन्हें भी फूल समझकर पार कर जाओ।

◆मनुष्य जन्म से नहीं, कर्म से महान बनता है।

◆जीवन कर्म का ही नाम है। जो कर्म नहीं करता उसका अस्तित्त्व तो है किन्तु वह जीवित नहीं होता। –हिलार्ड

◆ पता है– लोगों के संकल्प पूरे क्यों नहीं हो पाते! क्योंकि वे साचते कुछ, बोलते कुछ और कर कुछ और जाते हैं।

◆ एक ही पत्थर से दो बार ठोकर खाना–– गलतियों को ठीक करने की जगह, उन पर अड़े रहना–– दूसरों की गलतियों को देखकर अपनी गलतियाँ न सुधारना–– एक बड़ी गलती है।

◆ अच्छे विचारों से ही बुरे विचार समाप्त होते हैं; अच्छे व्यवहार से ही बुरे व्यवहार को समाप्त किया जा सकता है।

◆ समय व्यर्थ बीत गया तो पछतावा तुम्हारे भविष्य को अशांत कर देगा।

◆ जिन्हें अपने जीवन में कुछ करना ही होता है उन्हें रास्ते मिल ही जाया करते हैं–– और जिन्हें कुछ करना ही नहीं होता, उन्हें बहाने मिल ही जाया करते हैं।

◆कठिनाईयों में सिद्धान्तों की परीक्षा होती है। ◆फैसला जल्दी करो मगर बहुत सोचने के बाद–

◆विपत्तियों के बिना मनुष्य नहीं जान सकता कि वह ईमानदार है या नहीं।

स्व० पण्डित चन्द्रभानु आर्य के जीवन पर एक और पुस्तक

प्रिय पाठकगण! हरियाणा के प्रमुख साहित्यकार, ५० से अधिक भजन इतिहासों के लेखक, शांतिधर्मी के संस्थापक और १७ वर्ष तक सम्पादक रहे स्व० श्री चन्द्रभानु आर्य भजनोपदेशक के जीवन और साहित्य की परिचायक एक पुस्तक 'चन्द्रभानु आर्य : व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व' २०१६ में प्रकाशित हुई थी। अब उनके जीवन और कार्यों पर एक और पुस्तक का सम्पादन हरियाणा के प्रमुख युवा साहित्यकार गुगनराम सोसायटी के सचिव, डॉ० नरेश सिहाग बोहल (सम्पादक बोहल शोध मञ्जूषा शोध पत्रिका एवं विधि परामर्शक शांतिधर्मी हिन्दी मासिक) कर रहे हैं। यह एक शोध पुस्तक होगी और ISBN के साथ प्रकाशित होगी। इस पुस्तक के लिए आप पण्डित चन्द्रभानु आर्य के जीवन और कार्यों से सम्बंधित अपने शोधात्मक आलेख/ साहित्यिक विश्लेष्णात्मक लेख और उनके जीवन के संबंध में संस्मरणात्मक लेख भेज सकते हैं।

कृपया संबंधित सामग्री ईमेल द्वारा या पंजीकृत डाक से शीघ्रातिशीघ्र अधोलिखित किसी पते पर अवश्यमेव भेज दें। स्व० पण्डित चन्द्रभानु आर्य के साहित्य के लिए आप शांतिधर्मी कार्यालय से सम्पर्क कर सकते हैं।

विशेष : कृपया अपने आलेख पंजीकृत डाक/कूरियर या ईमेल द्वारा ही भेजें।

सहदेव समर्पित (9416253826)
shantidharmijind@gmail.com
सम्पादक शांतिधर्मी,
७५६/३ आदर्श नगर पटियाला चौक जींद–१२६१०२

डॉ० नरेश सिहाग (9466532152)
nksihag202@gmail.com
सम्पादक बोहल शोध मंजूषा,
२०२, न्यू हाऊसिंग बोर्ड भिवानी–१२७०२१

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक सहदेव द्वारा प्रियंका प्रिंटर्स, जींद के लिए ऑटोमैटिक ऑफसैट प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६१०२ (हरि०) से प्रकाशित। सम्पादक : सहदेव

ओ३म्

M- 98964 12152

रवि स्वर्णकार

हमारे यहाँ सोने व चांदी के जेवरात
आर्डर पर तैयार किये जाते हैं।

प्रो. रविन्द्र कुमार आर्य

६, आर्य समाज मंदिर, रेलवे रोड़, जीन्द (हरि०)-१२६१०२

।।ओ३म्।।

स्वामी भीष्म जी महाराज के शिष्य उत्तर भारत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक

स्व. पं. चन्द्रभान आर्य

की चुनी हुई रचनाओं का संकलन

(हरियाणा साहित्य अकादमी के सौजन्य से प्रकाशित)

भजन भास्कर

❖भक्ति ❖प्रेरणा ❖शौर्य ❖नारी, चार सर्गों में विभक्त

पृष्ठ : ९८, मूल्य : ₹80 (अस्सी रुपये) केवल
पंजीकृत डाक से मंगवाने के लिए मूल्य अग्रिम भेजें।

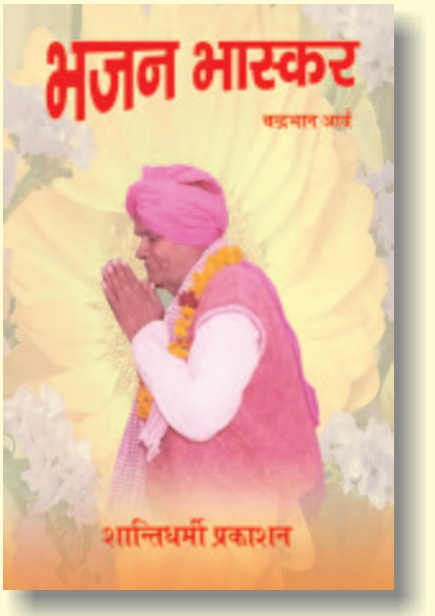

प्राप्ति स्थान

शांतिधर्मी प्रकाशन
756/3 आदर्श नगर सुभाष चौक जींद-126102 (हरयाणा)
दूरभाष : 9416253826, 9996338552

R.N.I. No. 70866/99 शान्तिधर्मी हिन्दी मासिक (अगस्त, २०१८) P.R. No. : PKL 150-A/2017-19

शांतिधर्मी एक अद्वितीय पत्र है

इसमें परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिये स्वस्थ और सुरूचिपूर्ण सामग्री होती है।

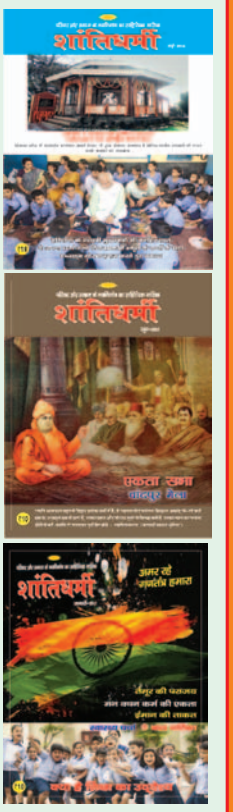

☆ **शांतिधर्मी** में धर्म-दर्शन के रहस्य, राष्ट्र व समाज की ज्वलंत समस्याओं पर अधिकारी विद्वानों के श्रेष्ठ विचार होते हैं।

☆ **शांतिधर्मी** भारतवर्ष के गौरवपूर्ण इतिहास की झलक दिखाता है।

☆ **शांतिधर्मी** वह मार्ग दिखाता है, जिसे पाने के लिये लोग भटक रहे हैं। परिवार में समाज में सह-अस्तित्व व अन्तरात्मा में सुख शांति का सन्देशवाहक है।

☆ **शांतिधर्मी** उस अध्यात्म का प्रचार करता है-जिसे अपनाने में देश-काल, जाति, मजहब, सम्प्रदाय की सीमाएँ आड़े नहीं आतीं। यह सच्चे ईश्वरीय ज्ञान का प्रचारक है।

☆ **शांतिधर्मी** स्वाध्याय भी है और स्वस्थ मनोरंजन का साधन भी।

☆ **शांतिधर्मी** प्रत्येक श्रेष्ठ-धार्मिक-राष्ट्रप्रेमी-मानवतावादी-व्यक्ति के लिये एक विचार-सूत्र है। प्रत्येक श्रेष्ठ परिवार का आभूषण है।

शांतिधर्मी पढ़िये-

अपने प्रति, समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति, ईश्वर के प्रति सर्वांगीण दायित्वों को जानिये।

जीवन के जटिल व गूढ़ रहस्यों को सहज ही सुलझाईये।

मूल्य : एक प्रति : 10.00 वार्षिक : 120.00 आजीवन : 1000.00

शान्तिधर्मी कार्यालय
756/3, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक)
जीन्द-126102 (हरियाणा)
फोन 9416253826, 9996338552
E-mail : shantidharmijind@gmail.com